ऋग्वेद

ओ३म्

यजुर्वेद

पवमान

(मासिक)

मूल्य: ₹ 15

वर्ष : 31 पौष-माघ वि0स0 2075 जनवरी 2019 अंक : 1

मुद्रक: सरस्वती प्रेस, देहरादून वजन: 50 ग्राम

श्रीमती सरोज अग्निहोत्री जी को विनम्र श्रद्धांजलि

श्रीमती सरोज अग्निहोत्री पत्नी श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी का दिनांक 24 नवम्बर 2018 को सायं लगभग 6 बजे आकस्मिक निधन हो गया। उन्होंने निधन से पूर्व दोपहर का भोजन किया तथा सायं 5 बजे चाय पी और आराम करने के लिए लेट गई और चिरनिद्रा में चली गई। उन्होंने एक योगी की तरह शान्त भाव से मृत्यु का आलिंगन किया।

श्रीमती सरोज अग्निहोत्री जी मुजफ्फरनगर के पौराणिक परिवार से सम्बन्ध रखती थी लेकिन श्री दर्शनकुमार जी से विवाह के उपरान्त उनके ऊपर अपनी सास श्रीमती शान्ति देवी तथा ससुर श्री गणेश दास जी के पवित्र, तपस्वी, यज्ञमय जीवन का ऐसा प्रभाव पड़ा कि उनका जीवन पूर्णरूपेण परिवर्तित हो गया और वह यज्ञ तथा ईशभजन में पूरी तरह रम गई। उन्होंने 101 बार चतुर्वेद पारायण यज्ञ किये और गायत्री यज्ञों की तो कोई गिनती ही नहीं। वह अनेक आर्य समाजों और आर्य संस्थाओं तथा गुरुकुलों की प्रधान/मंत्री थी और सभी के लिये उनके घर तथा हृदय के द्वार खुले रहते थे। अतिथि सेवा करके उन्हें अपार प्रसन्नता अनुभव होती थी। ऐसी यज्ञमयी, ममतामयी, सरल हृदय, तथा दानशील देवी के निधन से आर्य समाज की भारी क्षति हुई है। आइये संकल्प करें कि उन्होंने जो यज्ञ रूपी दीपक जलाया है उसे हम आर्य समाजी भाई बहन अपने घरों में प्रज्वलित करें और यथाशक्ति दान देकर आर्य समाजों, गुरुकुलों, आश्रमों, सन्यासियों, वानप्रस्थियों को संरक्षण प्रदान करेंगे। यही श्रीमती सरोज अग्निहोत्री जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून-248008

सामवेद अथर्ववेद

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

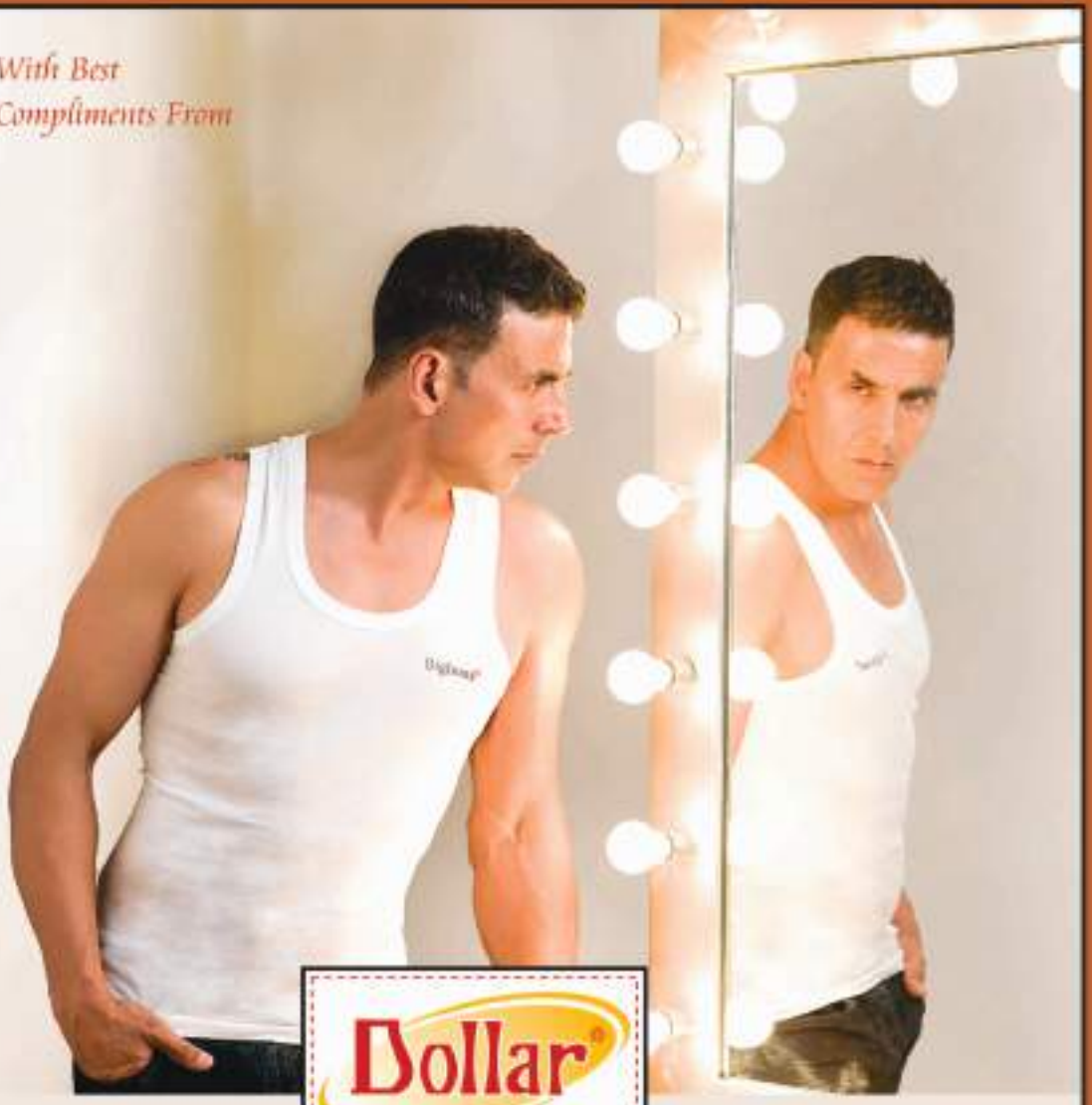

With Best
Compliments From
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

ओ३म्

पवमान

वर्ष–31 अंक–1

पौष–माघ 2075 विक्रमी जनवरी 2019
सृष्टि संवत् 1,96,08,53,119 दयानन्दाब्द : 194

★

–: संरक्षक :–
स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती

★

–: अध्यक्ष :–
श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री
मो. : 09810033799

★

–: सचिव :–
प्रेम प्रकाश शर्मा
मो. : 9412051586

★

–: आद्य सम्पादक :–
स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

–: मुख्य सम्पादक :–
डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री
अवैतनिक
मो. : 9336225967

★

–: सम्पादक मण्डल :–
अवैतनिक
आचार्य आशीष दर्शनाचार्य
मनमोहन कुमार आर्य

★

–: कार्यालय :–
वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,
तपोवन मार्ग, देहरादून–248008
दूरभाष : 0135–2787001

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com
Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत	वैदिक विनय से साभार	3
बाबा गुरुमुख सिंह जी का योगदान	डा० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	4
कैंसर के उपचार, निदान और सावधानियां	डा० विनीत तलवार	5
आश्रम तपोवन का इतिहास एवं परिचय	मनमोहन कुमार आर्य	7
महान दानी, सेवा भावी एवं संस्था शिल्पी बावा गुरमुख सिंह	मनमोहन कुमार आर्य	11
ऋषिभक्त महात्मा दयानन्द वानप्रस्थी जी	मनमोहन कुमार आर्य	14
बाघा जतिन	स्वामी यतीश्वरानन्द जी	18
धन्य हो ऋषि दयानन्द जी	पं उम्मेद सिंह विशारद	22
पद्मरागा का अश्रुतपूर्व तप	ईश्वरी प्रसाद प्रेम	25
योग–साधना, यजुर्वेद पारायण एवं गायत्री यज्ञ का विशेष आयोजन		30
दानदाताओं की सूची		31

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. "वैदिक साधन आश्रम"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. "पवमान"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
सत्संग भवन एवं आरोग्य धाम के निर्माण में सहयोग हेतु			
3. "वैदिक साधन आश्रम"	ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स 17 राजपुर रोड, देहरादून	00022010029560	ORBC0100002
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
4. 'तपोवन विद्या निकेतन"	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1.	कलर्ड फुल पेज	रु. 5000/– प्रति माह
2.	ब्लैक एण्ड व्हाईट फुल पेज	रु. 2000/– प्रति माह
3.	ब्लैक एण्ड व्हाईट हॉफ पेज	रु. 1000/– प्रति माह

पवमान पत्रिका के रेट्स

1.	मासिक मूल्य (1 पत्रिका)	रु. 20/– एक प्रति
2.	वार्षिक मूल्य (12 प्रतियाँ प्रति वर्ष)	रु. 200/– वार्षिक
3.	15 वर्ष (आजीवन) के लिए मूल्य	रु. 2000/–

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

श्रेष्ठ तपस्थली है, वैदिक साधन आश्रम तपोवन

तप का अर्थ है– पीड़ा सहना, घोर कड़ी साधना करना, मन का संयम रखना आदि। महर्षि दयानन्द के अनुसार ''जिस प्रकार सोने को अग्नि में डालकर इसका मल दूर किया जाता है उसी प्रकार सद्गुणों और उत्तम आचरणों से अपने हृदय, मन और आत्मा के मैल को दूर किया जाना तप है। गीता में तप तीन प्रकार के बताए गए हैं– शारीरिक, जो शरीर से किया जाये। वाचिक, जो वाणी से किया जाये और मानसिक, जो मन से किया जाये। देवताओं, गुरूओं और विद्वानों की पूजा अर्थात यथा योग्य सेवा और सुश्रूषा करना, ब्रह्मचर्य और अहिंसा शारीरिक तप हैं। ब्रह्मचर्य का अर्थ हैः शरीर के बीजभूत भाग तत्त्व की रक्षा करना और ब्रह्म में विचरना या अपने को सदा परमात्मा की गोद में महसूस करना। किसी को मन, वाणी और शरीर से हानि न पहुंचाना अहिंसा है। हिंसा और अहिंसा केवल शारीरिक ही नहीं अपितु वाचिक और मानसिक भी होती हैं । वाणी के तप से अभिप्राय हैः ऐसी वाणी बोलना जिससे किसी को हानि न पहुंचे। सत्य, प्रिय और हितकारक वाणी का प्रयोग करना चाहिए। वाणी के तप के साथ ही स्वाध्याय की बात भी कही गई है। वेद, उपनिषद आदि सद्ग्रन्थों का नित्य पाठ करना और अपने द्वारा किये जा रहे नित्य कर्मों पर भी विचार करना स्वाध्याय है। मन को प्रसन्न रखना, सौम्यता, मौन, आत्मसंयम और चित्त की शुद्वभावना यह सब मन का तप है। गुणवत्ता के आधार पर तप तीन प्रकार के होते हैं– सात्त्विक तप जो परम श्रद्धा से किया जाता है। राजस तप– अपना सत्कार चारों ओर बढ़ाने की इच्छा से किया जाने वाला तप राजस तप कहलाता है। तामस तप– पंचाग्नियों के बीच शरीर को कष्ट देना आदि जिससे करने वालों और देखने वालों दोनों को कष्ट हो और किसी का भी कोई हित न हो तामस तप कहलाते हैं। तप करने के लिए प्राचीन युग से ही लोग, विशेषकर परिव्राजक अरण्यों (वनों) की शरण में जाते थे। धीरे–धीरे जंगल सिमटने लगे और परिव्राजकों/सन्तों के लिए वहां जाना दुष्कर होने लगा, ऐसे में संरक्षित तपस्थलियों की आवश्यकता महसूस हुई। ऐसी ही एक तपस्थली है, वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी मार्ग देहरादून। यह भूमि बड़े–बड़े सन्तों, महात्माओं और ऋषियों द्वारा पवित्रीकृत है। प्राचीन समय में सम्पूर्ण उत्तराखण्ड योगियों और तपस्वियों से भरा रहता था। आज भी उत्तराखण्ड के सुदूर पर्वतों की गुफाओं में अनेक योगी सन्त तप करते हुए दिखाई देते हैं। जहां तक इस तपस्थली का प्रश्न है, महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती की प्रेरणा से बाबा गुरुमुख सिंह जी ने अपने पारिवारिक ट्रस्ट के धन से देहरादून नगर से कुछ दूरी पर नालापानी ग्राम में एक विशाल भूखण्ड खरीद कर 15 दिसम्बर 1946 को समस्त विश्व में वेद, यज्ञ ओर महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तों का प्रचार और प्रसार करने के लिए वैदिक साधन आश्रम तपोवन के नाम से एक पवित्र ज्योति स्थली स्थापित की जो आज विश्वभर को अपने ज्ञानालोक से प्रकाशित कर रही है। यह वैदिक साधन आश्रम तपोवन विशेषांक सुधी पाठकों की सेवामें प्रस्तुत है, ताकि हम इस स्थली पर और अधिक ध्यान केन्दित करते हुए तप के मार्ग पर चलने को तत्पर हों।

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

वेदामृत

हमें अपना सखित्व प्रदान करो

पवमानस्य ते वयं पवित्रमभ्युन्दतः
सखित्वं आ वृणीमहे।।
-ऋ० 9 । 61 । 4; साम० उ० 2 । 1 । 5

ऋषिः- **आङ्गिरसोऽमहीयुः।।** , देवता- **सोमः।।** छन्दः- **गायत्री।।**

विनय-हे त्रिभुवन-पावन! तुम अपने स्पर्श से इस सब जगत् को पवित्रता दे रहे हो। यह सच है कि तुम्हारे बिना यह संसार बिल्कुल मलिन है। यह संसार तो स्वभावतः सदा मलिन ही होता रहता है, विकृत होता रहता है, गन्दगियाँ पैदा करता रहता है, परन्तु तुम्हारी ही नाना प्रकार की पवित्र करनेवाली धाराएँ नाना प्रकार से इस संसार के सब क्षेत्रों से इन मलिनताओं को निरन्तर दूर करती रहती हैं। हे पवमान! हे सब जगत् को अपने अनवरत प्रवाह से पवित्र करनेवाले! जो मनुष्य तुम्हारे स्वरूप की इस पवित्रता को जानते हैं, वे अपने-आपको भी (अपने हृदय को भी) पवित्र करने में लग जाते हैं, अपने अनतःकरण से काम, क्रोध आदि विकारों को निकालकर इसे बड़े यत्न से निर्मल बनाते हैं। जब यह पवित्र हो जाता है तो इस पवित्र अन्तःकरण में तुम्हारी सात्त्विक धाराएँ जो आनन्द-रस पहुँचाती हैं, हृदय को सदा सरस बनाये रखती हैं, उसका वर्णन वाणी से नहीं किया जा सकता। पवित्रान्तःकरण भक्त लोग ही उसका अनुभव करते हैं। जिनके हृदयों में द्वेष, क्रोध, जड़ता आदि का कूड़ा भरा हुआ है उनके शुष्क हृदय, या जिन्होंने प्रेम-शक्ति का दुरुपयोग कर विषैले रसों से हृदय को गन्दा कर रखा है उनके मलिन हृदय, इस पवित्र आनन्द रस का आह्लाद क्या जानें? जब मनोविकारों का यह सूखा या गीला मैल निकल जाता है, तभी मनुष्य के हृदय में तुम्हारे पवित्र-रस का स्पन्दन होना प्रारम्भ होता है और उसमें फिर दिनों-दिन सात्त्विक रस भरता जाता है। भक्तिभाव के बढ़ने से जब भक्तों के हृदय-मानस आनन्द की हिलोरें लेने लगते हैं, तो वे देखने योग्य होते हैं। हे सोम! तब उनके पवित्र हृदय का तुम 'पवमान' के साथ सम्बन्ध जुड़ गया होता है। इस सम्बन्ध, इस सखित्व, इस एकता के कारण ही उनका हृदय सदा तुम्हारे भक्ति-रस के चुआनेवाला झरना बन जाता है। हे प्रभो! यही सम्बन्ध, अपना यही सखित्व हमें प्रदान करो। हे सोम! हम तुझसे इसी सखित्व की भिक्षा माँगते हैं। हे जगत् को पवित्र करनेवाले! जिस सख्य के हो जाने से तुम्हारी पवित्रकारक धारा मनुष्य के हृदय को सदा भक्ति-रस से रसमय बनाये रखती है, उसी सखित्व की भिक्षा हमें प्रदान करो। हम अपने हृदय को पवित्र करते हुए तुमसे यही सखित्व, यही मैत्रीभाव, यही प्रेम-सम्बन्ध प्राप्त करना चाहते हैं, वरना चाहते हैं। यह वर हमें प्रदान करो।

शब्दार्थ- पवित्रं अभि उन्दतः= हमारे पवित्र हुए अन्तःकरण को भक्तिरस से आर्द्र करते हुए **पवमानस्य ते**=तुझ परम पावन के **सखित्वम्**= सख्य का, मित्रभाव का **वयम्**= हम **आवृणीमहे**=वरण करते हैं।

वैदिक विनय से साभार

बाबा गुरुमुख सिंह जी और उनके परिवार का वैदिक साधन आश्रम के निर्माण में योगदान

—डा० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अमृतसर से लगभग 50 किलोमीटर दूर एक छोटे से कस्बे गोइन्दवाल में बाबा प्रद्युम्न सिंह के घर एक पुत्र रत्न ने जन्म लिया, जिसका नाम गुरुमुख सिंह रखा गया। बाबा प्रद्युम्न सिंह के परिवार का सम्बन्ध पंचनद की उस तीसरी पीढ़ी के गुरु अमरदास जी से जुड़ता है, जिसने अपने तप, त्याग और सेवा से मानवता का मस्तक ऊँचा किया था। अपनी प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् वे क्वेटा में अपने पिताजी के कपड़े के व्यापार की देख–रेख करने में लग गए। जहाज मार्का क्रेप खद्दर बाबा जी के ही कारखाने में बनता था सोलन में उनकी कपड़े की दुकान थी। जहाज मार्का क्रेप खद्दर की गांठें प्रति सप्ताह आतीं थीं और हाथों हाथ उठ जातीं थीं यह ब्रांड अत्यंत प्रसिद्ध हो गया था। इराक, मलेशिया, सिंगापुर, अफ्रीका, ईरान आदि देशों को भी भेजा जाता था।

1938 में बाबाजी ने अपने पूज्य पिताजी प्रद्युम्न सिंह की स्मृति में पांच लाख रुपये से एक ट्रस्ट की स्थापना की। इस ट्रस्ट के द्वारा 60 से अधिक शिक्षण–संस्थान, कई अस्पताल आदि पंजाब, हिमांचल, हरियाणा आदि में संचालित किए जाते थे। इसके अतिरिक्त हजारों अनाथों, विधवाओं आदि को सहायता देने के लिए प्रसिद्ध था। बाबाजी आर्यसमाज के दीवाने थे और आर्यसमाज के भवन निर्माण के लिए दिल खोलकर धन देते थे। जब आर्यसमाज लोहगढ़ अमृतसर के भवन–निर्माण की चर्चा हुई तो आपने घोषणा कर दी थी कि जितना सबलोग मिलकर इस भवन निर्माण के लिए धन एकत्र करेंगे, उतना वे भी देंगे, परन्तु जब भवन बनने लगा बाबाजी ने वायदे से भी दुगना धन दिया था।

ट्रस्ट के द्वारा खरीदी गई भूमि पर महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती की प्रेरणा से देहरादून नगर से कुछ दूरी पर नालापानी ग्राम में 15 दिसम्बर 1946 को समस्त विश्व में वेद, यज्ञ ओर महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तों का प्रचार और प्रसार करने के लिए वैदिक साधन आश्रम तपोवन के नाम से एक पवित्र ज्योति स्थली स्थापित की जो आज विश्वभर को अपने ज्ञानालोक से प्रकाशित कर रही है। अप्रैल 1950 के कुम्भ के मेले के पश्चात् महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती की प्रेरणा से 5 मई, 1951 को 25 याज्ञिक विद्वानों द्वारा स्वामी योगेश्वरानन्द जी महाराज के कमलों से पूर्णाहुति सम्पन्न की गई। इस पावन अवसर पर देश के विभिन्न क्षेत्रों से सैकड़ों आर्य सन्यासी, वानप्रस्थी, गृहस्थी, विद्वान् याज्ञिक और आर्यजन सपरिवार पधारे थे। इस प्रकार अपार श्रद्धालुजनों की भीड़ उमड़ पड़ी थी।

बाबा गुरुमुख सिंह जी के समस्त कार्यों में उनके अनुज बाबा महाराज सिंह का हाथ रहता था। वे कन्धे से कन्धा मिला कर सदा साथ चलते थे। सारा संयुक्त श्रम परिवार का था, जिसमें बाबा महाराज सिंह की मुख्य भूमिका रहती थी। परिवार की एक बलिदानी परम्परा थी। बड़ा भाई जो करता था, छोटा भाई लक्ष्मण बनकर उसका साथ देता था। बाबा गुरुमुख सिंह जी और उनके परिवार का वैदिक साधन आश्रम के निर्माण में अप्रतिम योगदान रहा है, जिसके लिए आर्यसमाज सदा उनका ऋणी रहेगा।

कैंसर (कर्क रोग) के कारण, उपचार, निदान और सावधानियां

—डा० विनीत तलवार

इस लेख के लेखक देश के जाने माने कैंसर रोग विशेषज्ञ हैं। आप राजीव गांधी कैंसर इन्स्टीट्यूट और अनुसंधान केन्द्र, रोहिणी, नई दिल्ली में मेडिकल औंकोलोजी के निदेशक हैं और गत लगभग पच्चीस वर्षों से कैंसर पीड़ित रोगियों की सेवा बड़ी निष्ठा और लगन से कर रहे हैं। आपका परिवार गत तीन पीढ़ियों से आर्यसमाज से गहराइयों से जुड़ा है। —सम्पादक

विश्व भर में मुत्यु के कारणों में कैंसर से 88 लाख मौतों के साथ सन् 2015 में दूसरा स्थान रहा है। कैंसर अन्य किसी बीमारी की तुलना में एक महामारी और मेडिकल चुनौती प्रस्तुत करती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक अनुमान के अनुसार विश्व भर में कैंसर की घटनाएं ऊपर की ओर बढ़ती जा रही हैं, जिनके रुकने का निकट भविष्य में कोई संकेत दृष्टिगोचर नहीं होता है। संचारी रोगों पर बढ़ते नियंत्रण और कैंसर की वृद्धि की प्रत्याशा के साथ सन् 2015 से विश्व में कैंसर के बोझ के बढ़ने की आशंका के चलते 20 करोड़ नये कैंसर के मामले प्रति वर्ष बढ़ रहे हैं। कैंसर रोग हमारे देश में बढ़ रहा है। वर्तमान में भारत में यह रोग मृत्यु का चौथा प्रमुख कारण है और इस श्रेणी में प्रति वर्ष प्रगति हो रही है। एक अनुमान के अनुसार देश में हर साल कैंसर के सात लाख से अधिक नए मामले प्राप्त होते है, जिनमें अनुमान से पांच लाख मामलों में मौत हो जाती है। हर साल उपचार के बाद औसतन तीन लाख लोगों के जीवित रह जाने पर लगभग 25 लाख रोगियों को निदान और उपचार की आवश्यकता है। इनमें उपचार के बाद समय—समय पर जांच की भी आवश्यकता पड़ती है।

कैंसर के कारण—

1— प्रदूषित वातावरणः— वातावरण में बहुत से ज्ञात, सम्भावित और सम्भव कार्सिनोजेन्स पाए जा सकते हैं और सभी लोग अपने शरीर में इन प्रदूषणकारी तत्त्वों को धारण किए रहते हैं। कोषिकाओं में लगने वाली चोटों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण वातावरणीय कारण वायु, जल और धरती पर प्रदूषण बढ़ना है।

2—प्लास्टिकः— प्लास्टिक के विघटन (नाश होने से) गैसेज निकलती हैं जो कार्सिनोजीनिक प्रमाणित होती हैं। यदि दैनन्दिन व्यवहार में प्लास्टिक का प्रयोग जारी रहता है और बिना रोक थाम के बढ़ता है तो यह अन्त में देश की सारी जनसंख्या के स्वास्थ्य पर अपरिवर्तनीय नुकसान करेगा।

3—तम्बाकू का प्रयोगः— विभिन्न रोगों, उदाहरण के लिए फेफड़ों, मूत्राशय, और मुंह के कैंसर के लिए तम्बाकू का प्रयोग अविवादित रूप से एक घटक के रूप में पहचाना गया है। तम्बाकू अपने सभी रूपों में कैंसर के बढ़ने में भारी योगदान देता है। तम्बाकू पीना न केवल कैंसर का जोखिम बढ़ाता है, परन्तु आसपास के वातावरण में दूसरे व्यक्तियों को भी धूम्रपान के कारण कैंसर का खतरा उत्पन्न होता है। महामारी और जैविक अनुसंधान तम्बाकू के

सेवन और कैंसर का जोखिम/खतरा का सम्बन्ध बीसवीं सदी से ज्ञात है। यह स्थापित हा चुका है कि तम्बाकू के सेवन से मुंह, गले, घेंघे, लीवर, मलाशय और महिला स्तन का कैंसर होता है।

4–शराब का प्रयोगः– विशेष रूप से शराब के सेवन से होने वाले कैंसर के लिए एक खुराक–प्रतिक्रिया संघ की स्थापना की गई है।

5–सिंथेटिक फर्टिलाइजर आदि का प्रयोगः– सिंथेटिक फर्टिलाइजर (उर्वरक), पेस्टिसाइड (कीटनाशक) और इनसैक्टिसाइड (कीटनाशक) जो आजकल कृषि उद्योग में बहुतायत से प्रयोग किए जाते हैं, कैंसर बढ़ाने में जोखिम के घटक हैं। इन रसायनों, जिनमें बहुत से ज्ञात कार्सिनोजेन्स हैं और विषैले स्तर से ऊपर के हैं, ये यौगिक जहां भोज्य पदार्थ अन्तिम रूप से उपभोग किए जाते हैं, में पाए जाते हैं।

6–शरीर में अत्यधिक वसा–शरीर में अतिरिक्त वसा ईसोफेगस, कोलोन, पैनक्रियाज (अग्नाशय), एण्डोमेट्रियम और किडनी (गुर्दे) में कैंसर का जोखिम बढ़ता है।

7–रजोनिवृत्ति पर– महिलाओं में रजोनिवृत्ति की आयु में स्तन कैंसर का जोखिम बढ जा़ता है।

8–रैडमीट का सेवन– रैडमीट (लाल मांस), विशेष रूप से प्रौसेस्ड मीट (प्रसंस्कृत मांस) का अत्यधिक सेवन का सम्बन्ध कोलारैक्टल कैंसर के बढ़ते जोखिम से जुड़ा है।

9–वाइरस, बैक्टीरियल और मैक्रो परजीवी का संक्रमण–वाइरस, बैक्टीरियल और मैक्रो परजीवी के संक्रमण विशिष्ट कैंसर के मजबूत जोखिम के कारण के रूप में पहचाने गए हैं।

10–एच0आइ0वी0 (H.I.V.) का संक्रमण– एच0आइ0वी0 का संक्रमण काफी हद तक प्रतिरक्षा दमन से कैंसर से सम्बन्धित जोखिम को बढ़ता है। HPV, HBV, HCV H पायलोरी आदि के संक्रमण से बहुतायत में कैंसर की पुष्टि की गई है।

11–जीवन शैली में परिवर्तन के कारण–जीवन शैली में परिवर्तन के कारण कुछ कैंसर उत्पन्न होते हैं, जिनका शीघ्र निदान जीवन शैली में परिवर्तन को रोक कर किया जा सकता है।

भारत में पाए जाने वाले सामान्य कैंसरः– भारत में पाए जाने वाले सामान्य कैंसर हैं– ल्यूकेमिया (श्वेतरक्तता), लिम्फोमा, लाइम्फोमा (Lymphoma), मल्टिपिल माइलोमा (Multipile Myloma) इत्यादि रुधिर विज्ञान सम्बन्धी कैंसर हैं। ब्रैस्ट, ओवरी (अण्डाशय), गर्भाशय, फेफड़े, सिर–गर्दन, जी0आइ0 बोन (G.I. Bone), ब्रेन (मस्तिष्क) आदि के कैंसर भारत में पाए जाने वाले सामान्य कैंसर हैं।

सावधानियांः–उपरोक्त क्रमांक 1 से 11 तक दिए गए कारणों के सम्बन्ध में लोगों को सावधान रहना चाहिए और इन वस्तुओं को कम से कम तथा सावधानीपूर्वक प्रयोग में लाना चाहिए।

निदान और उपचारः– जनता में जागरूकता के बढ़ने से और नियमित रूप से जांच से निदान और रोकथाम को शीघ्रता से किया जा सकता है। समय–समय पर नियमित जांच, मैमोग्राफी आदि, रजोनिवृत्ति के समय सावधानी, वजन पर नियंत्रण और योगासन और शारीरिक गतिविधियों को नियमित रूप से जारी रखकर कैंसर जैसे अभिषाप से दूर रह सकते हैं। यदि कोई भी शंका होती है तो तुरन्त जांच करवाना ही उचित उपाय है।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन का इतिहास एवं परिचय

–मनमोहन कुमार आर्य

आर्यसमाज एक वैश्विक धार्मिक एवं सामाजिक संगठन है। धर्म का तात्पर्य सत्याचरण एवं आत्मा की उन्नति से लिया जाता है। आत्मा की उन्नति ज्ञान व सत्य सिद्धान्तों का अध्ययन कर उनका आचरण करने से होती है। सत्य ज्ञान के मुख्य स्रोत ईश्वर प्रदत्त वेदज्ञान की संहितायें व उन पर वैदिक ऋषियों की टीकायें, व्याख्या ग्रन्थ व भाष्य आदि हैं। वेदों के 6 अंग व 6 उपांग हैं। शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष तथा कल्प यह वेदांग हैं तथा 6 दर्शन योग, सांख्य, वेदान्त, वैशेषिक, न्याय और मीमांसा उपांग हैं। वैदिक साहित्य में उपनिषदों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। यह आध्यात्मिक विद्या के ग्रन्थ हैं। मनुस्मृति, बाल्मीकि रामायण और महाभारत ग्रन्थों की गणना वैदिक साहित्य में की जाती है जिनका अप्रक्षिप्त और वेदानुकूल भाग ही ग्राह्य है। इनके अतिरिक्त भी संस्कृत में अनेक प्राचीन ग्रन्थों सहित आर्यसमाज के विद्वानों द्वारा लिखे गये शताधिक ग्रन्थ हैं जिनका स्वाध्याय कर मनुष्य का आत्मा ज्ञानवान होता है। **इस ज्ञान को गुरुओं से अथवा स्वाध्याय से प्राप्त करना और उसके अनुसार अपना जीवन बनाना ही साधना है।** साधना में ईश्वरोपासना, यज्ञ, ध्यान, चिन्तन–मनन आदि का विशेष महत्व है। एक ऐसा स्थान जहां यह सब सुविधायें सुलभ हों, उसे साधना केन्द्र व साधन–आश्रम की संज्ञा दी जा सकती है। वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून भी ज्ञान पिपासु साधकों को ज्ञान व साधना कराने में सहयोग प्रदान करता है। यहां साधना के लिए अनुकूल वातावरण हैं। यहां रहकर सभी आयु वर्ग के मनुष्य ज्ञान व सदाचार की साधना करके अपने जीवन को उसके अनुसार व्यतीत करने की शिक्षा लेकर व अभ्यास करके मनुष्य जीवन के लक्ष्य की ओर बढ़ सकते हैं।

महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती जी आर्यसमाज के विख्यात विद्वान व विप्र सन्त थे। आप वैदिक साहित्य के विद्वान एवं योगदर्शन के अनुसार साधनामय जीवन व्यतीत करने वाले आदर्श योगी थे। सन् 1944 से आरम्भ करके तीन वर्ष तक आप देहरादून की तपोवन की पहाड़ियों में समय–समय पर आकर योगदर्शन के अनुसार स्वाध्याय, चिन्तन, ध्यान, संयम, मौन, एकाकी जीवन तथा ईश्वर प्राप्ति के सभी साधनों का अभ्यास करते थे। साधना में मन का नियंत्रित होना सबसे मुख्य माना जाता है। आपने व अन्य योगियों ने पाया है कि यहां तपोवन, देहरादून का वातवारण मन को बाह्य जगत से पृथक करने तथा उसे ईश्वर में स्थिर करने में बहुत सहायक है। वैदिक साहित्य के स्वाध्याय से अर्जित यथार्थ ज्ञान से ही मनुष्य की आत्मा उन्नत होकर मोक्षगामी बनती है। मनुष्य की आत्मा को मोक्ष मार्ग पर प्रेरित कर उसे मोक्ष के साधनों से परिचित कराना व शनैः शनैः साधना द्वारा आत्मा का उन्नति के पथ पर अग्रसर होना जीवन के

लक्ष्य की प्राप्ति के लिये आवश्यक है। साधना के सभी प्रकार से अनुकूल वातावरण होने के कारण ही महात्मा आनन्द स्वामी जी की प्रेरणा से उनके एक अत्यन्त धर्मनिष्ठ धनवान् सहयोगी अमृतसर निवासी तथा कपड़ा उद्योग से जुड़े सफल व्यवसायी बावा गुरमुख सिंह ने यहां सन् 1946 में भूमि क्रय की और उस पर **'वैदिक साधन आश्रम तपोवन'** की स्थापना की थी। देश, समाज, आर्यसमाज के लोग तथा सभी साधक इस कार्य के लिये इन दोनों महानुभावों के सदैव ऋणी रहेंगे।

आश्रम के पास इस समय लगभग दो सौ बीघा भूमि है जिसमें मुख्यतः तीन परिसर हैं। पहला परिसर नालापानी गांव में हैं जहां आश्रम की अपनी एक यज्ञशाला, एक बड़ा व एक छोटा सभागार, पुस्तकालय, ध्यान केन्द्र, रसोईघर एवं भोजन कक्ष, बाग–बगीचा, एक वृहद चिकित्सालय भवन एवं 400 बालक– बालिकाओं का एक जूनियर हाईस्कूल है। साधको के लिये कुटियायें एवं अतिथि निवास भी हैं। आश्रम कार्यालय है और खाली भूमि भी है। अस्पताल, सभागार, कार्यालय एवं मंत्री जी का कक्ष तो अभी नये व भव्य रूप में बने हैं। दूसरा परिसर 4500 वर्ग गज की गोशाला है जो प्रथम आश्रम से 2 किमी. दूरी पर पहाड़ियों पर स्थिति है और चारों ओर साल के ऊंचे–ऊंचे वनों से घिरी हुई है। यह परिसर भी अच्छा बड़ा है जहां अच्छी 12 गायें हैं। एक गोपाल व इसका परिवार इस कार्य को देखता है। तीसरा परिसर मंगलूवाला गांव में प्रथम आश्रम से 3 किमी. व गोशाला से 1 किमी. की दूरी पर पहाड़ी पर स्थित है। यह तपोभूमि कहलाता है। यह पूरा आश्रम वनों से आच्छादित है। इसी को ईश्वर के ध्यान, मन की एकाग्रता, चिन्तन–मनन व साधना के लिये सर्वोत्तम बताया जाता है। यहीं पर महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज को इष्ट आध्यात्म– सम्पत्ति की प्राप्ति हुई थी। यह परिसर भी काफी विस्तृत हैं। यहां वर्तमान में चतुर्वेद पारायण यज्ञ एवं साधना शिविर स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी के सान्निध्य में आयोजित होते हैं। होली के आसपास एक माह का शिविर प्रतिवर्ष लगता है। आश्रम के वर्ष में दो बार जो दो उत्सव होते हैं उनमें भी यहां शनिवार का दिन यज्ञ, भजन व सत्संग आदि के लिये निर्धारित किया जाता है। यहां भी साधकों के लिये 10 कुटियाओं सहित एक विशाल एवं भव्य यज्ञशाला, सभागार, गीजर से युक्त शौचालय, विद्युत, जल आदि सुविधायें सुलभ है। यहाँ पर एक स्थान ऐसा है जिसे साधना के लिये बहुत उत्तम बताया जाता है। यहां एक चबूतरा बना है। उस पर वृक्षों की छाया रहती है। यहां बैठ कर ध्यान करने से योगी व साधक को शीघ्र सफलता मिलती है, ऐसा आश्रम के साधक बतातें हैं।

तपोभूमि में आरम्भ काल में जिन प्रमुख लोगों ने साधनायें व तप किया है उनमें कुछ प्रमुख नाम हैं महात्मा आनन्द स्वामी जी, उनके गुरु स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती जी, महात्मा प्रभु आश्रित जी, महात्मा आत्मानन्द सरस्वती जी, पं. दौलत राम शास्त्री जी, महात्मा बलदेव जी एवं महात्मा दयानन्द वानप्रस्थी जी आदि। स्वामी सम्बुद्धानन्द जी भी यहां कई वर्षों तक रहे। वह बहुत विद्वान, योगी एवं उच्च कोटि के साधक थे। हमने उनके द्वारा आर्यसमाज धामावाला देहरादून एवं भारत सरकार के एक विश्व विख्यात संस्थान भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून में एक–एक सप्ताह के योग साधना एवं वेद विद्या प्रशिक्षण शिविर लगाये थे। स्वामी जी की मृत्यु इसी आश्रम में हुई थी। आश्रम के

उत्सवों में अनेक बार उनके विद्वतापूर्ण उपदेश सुनने का अवसर भी हमें मिला। उनका व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली था। वह लम्बी दाढ़ी रखते थे, गौर वर्ण था और बोलने व प्रवचन की शैली भी श्रोताओं पर उनके ज्ञान व व्यक्तित्व आदि के गुणों का प्रभाव छोड़ती थी। आश्रम में सन् 1999 में एक उपदेशक विद्यालय खोला गया था। प्रथम नौ मास के एक शिविर में 7 पुरोहित तैयार हुए थे। उसके बाद यह उपदेशक विद्यालय चल नहीं सका। स्वामी दीक्षानन्द जी ने सन् 2000 में यहां संस्कृत–संस्कृति–स्वाध्याय शिविर चलाया था। समय–समय पर यहां अनेक प्रकार के उपयोगी शिविर आयोजित किये गये। वर्तमान में भी आचार्य आशीष दर्शनाचार्य जी यहां अनेक अवसरों पर विद्यालयों के युवाओं के लिये योग्यता विकास (Skill Development) के शिविर संचालित करते हैं। यह शिविर नियमित रूप से होते हैं जिसमें स्थानीय विद्यालयों व देश के दूरस्थ स्थानों के लोग भी भाग लेते हैं। इनसे हमारे युवा वैदिक संस्कृति के सम्पर्क में आकर उपासना एवं यज्ञ के संस्कार ग्रहण करते हैं।

सन् 1952 में महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज ने रोहतक में तीन माह की गायत्री यज्ञ साधना आरम्भ की थी। इसके अन्त में महात्मा जी को प्रेरणा हुई यहां से देहरादून चलो। आप वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून आये और यहां रहकर अपना व्रत पूर्ण करने का संकल्प लिया। आपने 34 दिन मौन रखा और गायत्री साधना व मन्त्र जप आदि करते रहे। 30 मार्च सन् 1952 के अपने लिखित सन्देश/पत्र में आपने महात्मा आनन्द स्वामी जी को सूचित किया **''30–3–1952 की प्रातः मेरे लिये बहुत सुन्दर थी। मुझे जो प्राप्त था, उस पर मुझे अन्दर से सन्तोष न होता था। कई व्रत भी किए परन्तु कोई पर्दा रह जाता था। सुन्दर कुटिया में एक पर्दा उठा और बाकी सब पर्दे यहां (वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून में) उठ गये।''** इसके बाद भी महात्मा जी कई बार तपोवन पधारे और यहां साधना सहित यज्ञ व सत्संग आदि करते कराते रहे। महात्मा प्रभु आश्रित जी के शब्द वैदिक साधन आश्रम तपोवन की महत्ता के द्योतक हैं।

आश्रम के पुराने सदस्यों सहित आश्रम परिवार के प्रमुख लोगों के नामों का उल्लेख भी यहां कर देना हमें समीचीन लगता है। बावा गुरमुख सिंह जी एवं महात्मा आनन्द स्वामी जी के अतिरिक्त कुछ नाम हैं सेठ रुलिया राम गुप्ता, श्री भोलानाथ आर्य, श्री मेला राम, मास्टर ज्ञान चन्द, कविराज हरनाम दास बी.ए., सेठ बंशीधर, महात्मा बलदेव, महात्मा दयानन्द वानप्रस्थी, श्री धर्मेन्द्र सिंह आर्य, श्री पृथ्वीचन्द हरि, श्री योगेन्द्र सिंह भल्ला, श्री इन्द्रसेन 'जिज्ञासु', श्री जगदीश लाल रहेजा, श्री आशीष दर्शनाचार्य, श्री विक्रम बावा, श्री मनीष बावा, श्री जयराम सिंह ओबराय, श्री तेज कृष्ण कौल, श्री योगेश मुंजाल, श्री हरिचन्द, श्री हरबंस लाल मरवाह, पं. हीरानन्द शर्मा, श्री सोहन लाल अरोड़ा, श्री रामलाल नारंग, स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती, कुंवर बृज भूषण, श्री घनश्याम वर्मा, श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री, श्रीमती सन्तोष रहेजा, श्री देवदत्त बाली, श्री यशपाल आर्य, श्री सोमनाथ ढ़ीगरा, श्री पी.एन. बजाज, श्री प्रेम प्रकाश शर्मा, श्री मनजीत सिंह एवं श्री महेन्द्र सिंह चौहान आदि।

आश्रम में साधक साधिकायें आते और जाते रहते हैं। कुछ स्थाई रूप से भी यहां रह रहे हैं। प्रातः व सायं यज्ञ एवं सत्संग होता है। साधकगण आचार्य आशीष दर्शनाचार्य जी तथा

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी से अपनी–अपनी साधना सम्बन्धी शंकाओं का समाधान प्राप्त कर सकते हैं। साधकों के लिये साधना विषयक सभी प्रकार की सुविधायें आश्रम उपलब्ध कराता है। जो साधक नीचे के आश्रम में रहकर साधना करना चाहते हैं, वह यहां रहकर कर सकते हैं और जिन्हें पूर्ण एकान्त व निर्जन स्थान अच्छा लगता है, वह इस आश्रम से 3 किमी. दूर पहाड़ियों व वन पर स्थित साधना स्थली तपोभूमि में रहकर साधना कर सकते हैं। आत्म–कल्याण, परजन्मों के सुधार, ईश्वर साक्षात्कार सहित मोक्ष की ओर पग बढ़ाने का साधन स्वाध्याय, ध्यान, यज्ञ आदि साधनाओं से होता है। पाठकों से हमारा निवेदन है कि वह आश्रम के शरदुत्सव या ग्रीष्मोत्सव के अवसर पर एक बार आश्रम में आने का कष्ट करें जिससे वह भविष्य में जब आवश्यकता अनुभव करें यहां आकर साधना कर सकें। पाठक आश्रम की मासिक पत्रिका पवमान के सदस्य भी बन सकते हैं। इसके लिये आश्रम के मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी, मोबाइल नं. 09412051586, से सम्पर्क कर पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं। इससे आपको घर बैठे आश्रम विषयक सभी सूचनायें व जानकारियों सहित स्वाध्याय की प्रचुर सामग्री मिल जाया करेगी। आप भी पत्रिका के सम्पादक को अपने साधना के अनुभवों से सम्बन्धित लेख भेजकर अन्य पाठकों व साधको को लाभ पहुंचा सकते हैं।

आश्रम में इस समय अनेक निर्माण कार्य चल रहे हैं। देहरादून में उत्तराखण्ड के माननीय उच्च न्यायालय, नैनीताल ने सड़कों के दोनों ओर के एनक्रोचमेन्ट हटाने का आदेश दिया था। देहरादून के कई बाजार व स्थान इससे प्रभावित हुए। आश्रम की 1000 फीट लम्बी बाउण्ड्री दीवार तोड़कर लगभग 10 फीट पीछे कर दी गई है। अब 1000 फीट लम्बी तथा 9 फीट ऊंची बाउण्ड्री–वाल का निर्माण किया जा रहा है। आश्रम के तपोवन विद्या निकेतन जूनियर हाई स्कूल में चौकीदार के लिये एक कमरे का सेट तथा स्कूल की कक्षाओं के लिये चार कमरे बन रहे हैं। आश्रम के अस्पताल की छत की ग्राउटिंग का कार्य भी शेष है। अस्पताल चल रहा है जिससे गांव के लोगों सहित आश्रम के स्कूल के विद्यार्थी तथा आश्रमवासी लाभान्वित हो रहे हैं। आश्रम की सन् 1950 में बनी यज्ञशाला उत्सवों में याज्ञिकों की वृद्धि होने के कारण छोटी पड़ रही थी। ग्रीष्मकालीन उत्सव में प्रायः वर्षा होने से यज्ञ में व्यवधान पड़ता था। अतः यज्ञशाला के चारों ओर खाली स्थान में छत डाल दी गई है। इसका कुल क्षेत्रफल लगभग साढ़े चार हजार वर्ग फीट है। अब इसकी पूर्णता व फिनिशिंग का काम होना है। प्रयास यह किया जा रहा है कि इस यज्ञशाला को भी भव्य रूप दिया जाये जिससे यहां आने वाले याज्ञिकों के मन पर सात्विक प्रभाव पड़े। इन समस्त कार्यों का अनुमानित व्यय 25 लाख से अधिक हो सकता है। इसके लिये ऋषिभक्तों, वैदिक धर्म–प्रेमियों तथा दानी महानुभावों से 25 लाख रुपये की दान राशि की आवश्यकता है। अतः दानी महानुभावों से अपील है कि वह इस काम को पूर्ण कराने में अधिक से अधिक सहयोग करें। जब तक इस यज्ञशाला में याज्ञिक यज्ञ करेंगे इसका पुण्य लाभ सभी दानी महानुभावों को होगा। हमारे प्रधान जी, मंत्री जी व अन्य लोग भी अपनी ओर से यथाशक्ति दान देकर सहायता प्रदान करते रहते हैं जिससे आश्रम सुचारू रूप से चल रहा है। इस विवरण के बाद हम आश्रम के संस्थापक बावा गुरुमुख सिंह जी और आश्रम की उन्नति में मुख्य योगदान करने वाले महात्मा दयानन्द जी का परिचय दे रहे हैं।

महान दानी, सेवा भावी एवं संस्था शिल्पी बावा गुरमुख सिंह

–मनमोहन कुमार आर्य

देहरादून का प्रसिद्ध वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी रोड, देहरादून जब तक रहेगा, इसके संस्थापक बावा गुरमुख सिंह जी और उनके प्रेरक महात्मा आनन्द स्वामी जी के नाम को अमर रखेगा। बावा गुरमुख सिंह जी का जन्म अमृतसर में एक सिख परिवार में पिता प्रद्युम्न सिंह जी के यहां हुआ था। आपके जन्म का गांव अमृतसर से लगभग 50 किमी. दूरी पर **'गोइन्दवाल'** है। पिता एवं परिवारजनों ने आपका नाम **'गुरमुख सिंह'** रखा। बावा जी के परिवार का सम्बन्ध पंजाब के सिख गुरुओं की तीसरी पीढ़ी के श्री गुरु अमरदास जी से है जिन्होंने अपने तप, त्याग, सेवा से उच्च आदर्श उपस्थित किये हैं।

आपने आरम्भिक शिक्षा अपने कस्बे के निकट प्राप्त की और उसके बाद आप क्वेटा (पाकिस्तान) में अपने पिताजी के कपड़े के व्यापार की देखरेख का काम करने लगे। आपके पिता का कपड़ा बनाने का कारखाना था। आपके इस उद्योग में **'जहाज मार्का क्रेप–खद्दर'** बनता था। कपड़े का यह ब्रांड देश–विदेश में प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय था और इसकी बहुत बिक्री हुआ करती थी। देश के सभी भागों के अतिरिक्त आपका बनाया हुआ वस्त्र इराक, मलेशिया, सिंगापुर, ईरान व अफ्रीका आदि देशों को भी भेजा जाता था।

बावा गुरमुख सिंह की उदारता का एक उदाहरण यह भी है कि इन्होंने महात्मा आनन्द स्वामी जी को उन दिनों एक लाख रुपया वेद प्रचार कार्य के लिये दिया था। बावा जी उदार हृदय के धनी थे। उनका दूसरा गुण था कि पद व प्रतिष्ठा से दूरी व वैराग्य। आप आर्यसमाज के एक जुझारु नेता भी थे। आप जीवन भर पद व प्रतिष्ठा से दूर रहे। आप स्वामी श्रद्धानन्द जी और उससे पूर्व पं. लेखराम जी के द्वारा विधर्मियों व स्वजनों की शुद्धि के आत्मना समर्थक थे। बतातें हैं कि जब आर्यसमाज शुद्धि तथा दलितोद्धार आदि समाज सुधार के कार्य आरम्भ करता था तो आप दिल खोल कर आर्थिक सहायता देते थे। स्वदेशी चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद में भी आपकी गहरी रुचि थी। आपने आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति पर अनुसंधान व गवेषणा के केन्द्रों को सहायता देने के साथ आयुर्वेदिक चिकित्सालयों की स्थापनाओं में भी सहयोग दिया था।

यज्ञ अग्निहोत्र आर्यसमाज की संसार को अनुपम देन है जो वायु से दुर्गन्ध व प्रदुषण को दूर करने के साथ मनुष्यों को आध्यात्मिक एवं कायिक लाभ पहुंचाता है। यज्ञ करना मनुष्य का अनिवार्य कर्तव्य है। जो नहीं करता वह पाप करता व दुःख पाता है। ऋषि दयानन्द ने लिखा है कि मनुष्य के शरीर के निमित्त से जितना दुर्गन्ध वायु, जल व भूमि आदि में विकार उत्पन्न करता है, उतना व उससे अधिक वायु आदि की शुद्धि प्रत्येक गृहस्थ मनुष्य को अग्निहोत्र यज्ञ करके करनी चाहिये। बावा गुरमुख सिंह जी की यज्ञ–अग्निहोत्र में गहरी रुचि थी। वह यज्ञ करके मानसिक शान्ति व तृप्ति का अनुभव करते थे। एक बार की बात है कि सूखा पड़ा। वर्षा न होने के कारण किसानों

की फसल नष्ट हो गई। किसान और अन्य लोग वर्षा के लिये आकाश की ओर देखते और ईश्वर से प्रार्थना करते कि शीघ्र वर्षा हो। ऐसे समय में बावा जी ने वृष्टि यज्ञ का आयोजन कराया। यज्ञ के प्रभाव से वायुमण्डल में परिवर्तन हुआ। बादल आये और यज्ञ की पूर्णाहुति से पहले ही तेज वर्षा हो गई। इस घटना से बावा जी की यज्ञ में श्रद्धा व विश्वास का अनुमान लगाया जा सकता है। बावा जी का जीवन ही यज्ञमय था। वह वैदिक धर्म के अग्रणीय नेता व प्रेरक जीवन के धनी थे।

बावा जी मानवता के सच्चे पुजारी थे। आप एक बार कश्मीर गये। वहां आपने गरीबी देखी तो आपका साधु हृदय दया व प्रेम से भर गया। आपने वहां के किसानों व गरीबों को रुपया बांटा। उनकी भावना थी कि कोई मनुष्य भूखा न रहे, सबके घर में पेट भरने के लिए भोजन व अन्न हो। बावा जी व्यापार–मण्डल के सक्रिय सदस्य भी थे। सन् 1942 में इस संगठन ने सरकारी बिक्री कर अधिनियम के विरुद्ध लम्बी हड़ताल की। समस्त पंजाब में हड़ताल की गई। वर्तमान का पाकिस्तान भी तब पंजाब का हिस्सा था। हड़ताल यदि लम्बी चले तो उसमें छोटे व्यापारी टिक नहीं पाते। बावा जी ने इनकी पीड़ा दूर करने के लिये लंगर चलाये। सब जरुरतमंदों तक भोजन पहुंचाने का प्रयास किया। व्यापारियों को आवश्यकता की सामग्री सहित नगद धन भी दिया। आन्दोलन चालीस दिन चला। बावा जी भी इस अवधि में लोगों तक अन्न, धन व आवश्यकता की सामग्री वितरित करते–कराते रहे।

अखिल भारतीय हिन्दू महासभा का सन् 1945 में एक अधिवेशन अमृतसर में सम्पन्न हुआ। इसकी प्रेरणा आप ने ही की थी। इस सम्मेलन में हिन्दू महासभा के वरिष्ठ नेता डॉ. गोकुल चन्द नारंग, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी आदि अमृतसर पधारे थे। इन सभी नेताओं का आतिथ्य बावा गुरमुख सिंह जी ने अपने भव्य एवं विशाल निवास पर ही किया था।

बंगाल में सन् 1945 में भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा। वहां के लाखों लोग अन्न के दाने–दाने को तरस गये। हजारों निर्धन आबाल–वृद्ध जन अन्न मिलने की आशा में मर गये। हमने आर्यनेता, सार्वदेशिक सभा के मंत्री और प्रसिद्ध सासंद श्री ओमप्रकाश पुरुषार्थी से सुना था कि वह भी बंगाल दुर्भिक्ष पीड़ितों की सहायता करने गये थे। एक माता की सुनसान झोपड़ी में पहुंचने पर उसने रो–रो कर अपनी आप–बीती कथा सुनाई थी। उसने उन्हें बताया था कि कई दिनों तक वह भूखी रही। उससे अपनी भूख पर नियंत्रण नहीं हो रहा था। उनके पास एक छोटा बच्चा था। भूख की असहनीय पीड़ा से त्रस्त उस माता ने उस बच्चे को मारकर खा लिया। यह घटना सुनाकर श्री पुरुषार्थी जी ने कहा था कि उस माता से पूछने पर उसने स्वयं स्वीकार किया था कि मांसाहारी होने के कारण उससे यह कृत्य हुआ। यदि उसमें मांसाहार के संस्कार न होते तो वह यह दुष्कृत्य न करतीं। ऐसे दुर्भिक्ष में वहां पीड़ितों की सहायता के लिये अनाज भेजने के लिए बावा जी को अंग्रेज सरकार से बुरी तरह से जूझना पड़ा। सरकार रेल के खाली वैगन देने में न–नुकर कर रही थी। बावा जी ने इस पर सरकार को कहा कि आप मुझे बंगाल में अन्न भेजने की अनुमति दे दो। मैं स्वयं सड़क मार्ग से ट्रकों से वहां अन्न पहुंचा दूंगा। बावा जी द्वारा वहां अन्न भेजा गया जिसका वितरण आर्यसमाज के आर्यवीर स्वयंसेवकों व अन्यों ने किया। बावा जी ने जो अन्न भिजवाया वह चार लाख रुपयों से अधिक धनराशि का था। आप

अनुमान कीजिये कि यह धनराशि आज की चार लाख नहीं अपितु उन दिनों की थी जब एक रुपये का 12 सेर गेहूं और 6 सेर बासमती चावल आता था। इसका अर्थ हुआ कि इस धनराशि से 48 लाख सेर गेहूं लिया जा सकता था। किलो में यह 45 लाख किलो अर्थात् 4,500 टन होता है। आज यह धनराशि लगभग साढ़े पांच करोड़ रुपये होती है। बावा जी का यह काम किसी महायज्ञ से कम नहीं था। यह तो हमें हजारों महायज्ञों के समान प्रतीत होता है।

सन् 1947 में देश का विभाजन हुआ। पाकिस्तान से लाखों की संख्या में हिन्दू शरणार्थी अपनी समस्त भौतिक सम्पत्ति वहां छोड़कर, विधर्मियों से लुट–पिट कर और अपने प्रियजनों की जानें गवांकर भारत आये। बावा जी ने इस अवसर पर भी अपने विशाल हृदय का परिचय देते हुए उनके लिये लंगर चलाए, उन्हें वस्त्र दिए, उनके निवास की व्यवस्था की और उनके लिए शिविरों का प्रबन्ध किया। बावा जी ने भारतीय सैनिकों और पुलिस बलों को भी पूरी सहायता दी जिससे हिन्दू शरणार्थी भारत में कुशलतापूर्वक पहुंच सकें।

भारत और पाकिस्तान के प्रधानमंत्रियों नेहरु जी और मियां लियाकत अली के बीच शरणार्थियों की समस्या हल करने के लिये जो बैठक हुई थी वह बावा गुरुमुख सिंह जी के निवास स्थान पर ही हुई थी। सरदार पटेल आदि वरिष्ठ नेता भी शरणार्थियों की वास्तविक स्थिति जानने के लिये बावा जी को ही प्रतिदिन फोन करते थे।

बावा जी शिक्षा जगत से भी जुड़े रहे। आप दयानन्द ऐंग्लो वैदिक प्रबन्धक ट्रस्ट के आजीवन सदस्य रहे। बहुत से स्कूल व कालेज आपकी सीधी देख–रेख में चलते थे। आपने शिक्षा के प्रचार व प्रसार में लाखों रुपया व्यय किया था। बावा जी को अपने इन समाज सेवा के कार्यों में अपने छोटे भ्राता **श्री बावा महाराज सिंह जी** का भी पूर्ण सहयोग मिला अन्यथा यह सेवाकार्य सम्भव नहीं था। आपके परिवार में बलिदान व सेवा की परम्परा रही है जिसका संकेत पूर्व किया गया है। आपने मर्यादा पुरुषोत्तम राम के अनुज लक्ष्मण की तरह अपने बड़े भ्राता जी का साथ दिया। जब कभी कोई सज्जन बावा महाराज सिंह जी से संस्थाओं के सहयोग की बात करते थे तो आप कहते थे कि **'मैं तो भरत की तरह भाई की खड़ाऊवें लेकर गद्दी पर बैठा हूं। यह गद्दी तो मेरे बड़े भाई साहब की है। मैं तो बस सेवक हूं और सेवा करता हूं।'** आप अनुमान कर सकते हैं कि बावा महाराज सिंह जी का जीवन भी भरत की तरह कितना त्याग–तपस्या से युक्त व सेवाभावी रहा होगा? बावा गुरमुख सिंह जी ने जो महान कार्य किये उसमें उनके अनुज व पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त था। उनके माता–पिता धन्य हैं जिन्होंने अपनी सन्तानों व परिवार के ऐसे श्रेष्ठ व ऊंचे संस्कार दिये थे।

ऐसी महान स्मरणीय एवं अनुकरणीय आत्मा बावा गुरमुख सिंह जी द्वारा महात्मा आनन्द स्वामी जी की प्रेरणा पर वर्तमान में करोड़ों रुपये की भूमि खरीद कर **'वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून'** की स्थापना की गई थी और उसके बाद भी उनका सहयोग जारी था। हम श्रद्धेय बावा जी को अपने श्रद्धा–सुमन अर्पित करते हैं और आश्रम की संवृद्धि और सफलता की कामना करते हैं। हमने इस लेख में आश्रम के पूर्व प्रधान श्री यशपाल आर्य जी की सामग्री का उपयोग किया है। हम उनका हृदय से आभार एवं धन्यवाद करते हैं।

ऋषिभक्त महात्मा दयानन्द वानप्रस्थी जी

—मनमोहन कुमार आर्य

वैदिक साधन आश्रम की स्थापना सन् 1949 में हुई थी। इसके संस्थापक बावा गुरुमुख सिंह जी और उनके श्रद्धास्पद आर्य संन्यासी महात्मा आनन्द स्वामी थे। आश्रम में सभी प्रकार व श्रेणियों के साधक—साधिकायें आते रहे हैं। आश्रम में वर्ष में दो बार ग्रीष्मोत्सव एवं शरदुत्सव आयोजित किये जाते हैं। आरम्भ के बीस वर्षों का तो हमें ज्ञान नहीं परन्तु वर्ष 1970 से हम आश्रम के प्रायः सभी उत्सवों में उपस्थित होते रहे हैं। महात्मा दयानन्द जी रेलवे विभाग में सेवारत रहे। सन् 1912 में आपका जन्म हुआ था और सन् 1989 में आपकी मृत्यु हुई थी। रेलवे में 58 वर्ष की आयु में सेवा निवृत्ति होती थी। महात्मा दयानन्द जी रेलवे से सेवानिवृत्त होकर देहरादून आये और यहां के **'जाखन'** स्थान में दो कमरों की कुटिया बनवाकर रहने लगे। इन दो कमरों की कुटियां में ही आपके पुत्र डा. सत्यानन्द जी का विवाह सन् 1976 में हुआ था। इस कुटिया में ही महात्मा जी समय समय पर साधना, सत्संग व वृहद् यज्ञों का आयोजन कराते थे। अपने रेल सेवाकाल के दिनों में ही आप महात्मा प्रभु आश्रित जी के सम्पर्क में आकर उनके शिष्य बन गये थे। आपकी महात्मा प्रभु आश्रित जी से अति निकटता थी। आपकी पुत्री श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा जी का विवाह सम्बन्ध भी आपने दिल्ली के अपने एक शिष्य आर्य परिवार से कराया था। महात्मा प्रभु आश्रित जी ने सन् 1959 में यह विवाह सम्पन्न कराया था। यह प्रसंग आदरणीय श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा जी ने हमें बताया था। देहरादून रहते हुए महात्मा प्रभु आश्रित जी की साधना स्थली **'वैदिक साधन आश्रम तपोवन'** से आपका निकट सम्बन्ध जुड़ना आवश्यक था। वहां साधकों को प्रशिक्षण के साथ साधना, यज्ञ एवं उपदेशादि कराने वाले एक समर्पित विद्वान की आवश्यक तो थी ही। यज्ञों के प्रति महात्मा प्रभु आश्रित जी की शिष्य मण्डली में अधिक श्रद्धा पाई जाती है। यह गहन श्रद्धा महात्मा दयानन्द जी में बहुत पहले से थी। अतः सेवानिवृति के बाद आप देहरादून आकर वैदिक साधन आश्रम तपोवन से जुड़ गये और यहां धर्माचार्य एवं यज्ञ आदि सम्पन्न कराने वाले ब्रह्मा के रूप में साधकों को प्रशिक्षित करने का कार्य करने लगे।

महात्मा दयानन्द वर्तमान में पाकिस्तान स्थित मुलतान नगर के रहने वाले थे। सन् 1912 में आपका जन्म हुआ था। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती पद्मावती था। आपकी चार सन्तानों में तीन पुत्रियां एवं 1 पुत्र हुए। तीन पुत्रियां श्रीमती विमला, श्रीमती सन्तोष एवं श्रीमती सुरेन्द्र तथा पुत्र डा. सत्यानन्द हैं। डा. सत्यानन्द जी के लखनऊ में भी एक दो चिकित्सालय हैं और अमेरिका में भी आप चिकित्सक हैं। श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा जी 80 वर्ष की आयु की हैं और देहरादून में निवास करती हैं। आप आर्य विदुषी देवी हैं। आपने

ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी से तथा डा. प्रज्ञा देवी के साथ कुछ समय अष्टाध्यायी–महाभाष्य आदि की शिक्षा प्राप्त की है। वैदिक साधन आश्रम तपोवन में प्रत्येक उत्सव में आयोजित होने वाले महिला सम्मेलन का प्रति वर्ष संयोजन आप ही करती हैं। महात्मा जी ने महात्मा प्रभु आश्रित जी के मार्ग पर चल कर यज्ञ के प्रचार व प्रसार का स्तुत्य कार्य किया है।

हमने आर्यसमाज से सन् 1970 में सम्पर्क व प्रवेश के समय से ही महात्मा दयानन्द वानप्रस्थी जी को यज्ञ कराते व प्रवचन करते देखा व सुना है तथा उनमें भाग लिया है। उनका दिव्य चित्र हमारी आंखों में विद्यमान है। उनके स्वर भी हमारी स्मृति में हैं। वह कैसे बोलते थे व अपनी बात को कहते थे, यह हमें स्मरण है। तपोवन आश्रम की यज्ञशाला में यज्ञ कराते हुए वह सूक्त पूरा होने पर कुछ मन्त्रों की प्रमुख बातों पर प्रकाश डालते थे। उनकी टिप्पणियां बहुत महत्वपूर्ण होती थीं। हमें एक घटना याद है। एक बार हम यज्ञशाला के बाहर तम्बू के नीचे श्रोताओं के रूप में बैठे थे। यज्ञ चल रहा था। उसी बीच हमने अपने मित्र श्री धर्मपाल जी से कुछ बातचीत बहुत धीमी आवाज में की थी। महात्मा जी हमारे सामने थे और हम दोनों एक दूसरे को देख रहे थे। हमें पता नहीं चला परन्तु जब सूक्त समाप्त हुआ और वह मन्त्रों पर टिप्पणी करने लगे तो बाद में उन्होंने कहा कि यज्ञ में उपस्थित श्रोताओं को परस्पर बातें नहीं करनी चाहिये। वेदों का ज्ञान नित्य है। हमारी आत्मा भी अनादि व नित्य तथा अमर है। हमने पूर्वजन्मों में अनेक बार यज्ञ किये होंगे। वेदों को पढ़ा और पढ़ाया भी होगा। वेदमन्त्रों का श्रवण भी किया होगा। हो सकता है कि यज्ञ में मन्त्रों का एकाग्रता से श्रवण करते समय हमें पूर्वजन्मों की कोई बात स्मरण हो आये या परमात्मा ही हमें कोई विशेष प्रेरणा कर दें। यदि हम बात कर रहे होंगे तो हम उससे वंचित हो जायेंगे। उनकी इन पंक्तियों को बोलने से पूर्व आहुतियों के समय हमने बात की थी अतः हमें लगा था कि महात्मा जी ने हमें ही यह प्रेरणा की है। यहीं कारण है कि महात्मा जी की वह बात हमें जीवन में बार–बार याद आती रहती है।

महात्मा दयानन्द जी आश्रम के सभी छोटे व बड़े यज्ञों को तो कराते ही थे, ग्रीष्मोत्सव तथा शरदुत्सव में वृहद वेद पारायण यज्ञों के ब्रह्मा भी आप ही होते थे। समापन समारोह में भी आप सबसे अन्त में बोलते थे। ईश्वर की कृपा व मेहरबानियों को याद करते व कराते थे और सहसा उनकी आंखों से अश्रुधारा बह निकलती थी। उनका कण्ठ भर आता था। आवाज निकलती नहीं थी। ऐसी अवस्था में वह अनेक बार रुमाल से अपनी आंखे पोछते थे। उनके हृदय की सरलता व उदारता ऐसी थी जिससे वह उत्तम कोटि के महात्मा व सन्त अनुभव होते थे। एक बार के उत्सव में उन्होंने एक संस्मरण सुनाया। उन्होंने कहा कि वह आश्रम के उत्सव के लिये दान संग्रह करने निकटवर्ती रायपुर स्थान पर अपनी टोली के साथ गये। वहां वह एक प्रसिद्ध चिकित्सक जो विदेशों में विद्यार्थियों को चिकित्सा विज्ञान पढ़ाता था, उसके निवास पर मिले और उससे दान प्राप्त किया। वार्तालाप में उस चिकित्सक महोदय ने

कहा कि मैं विज्ञान को मानता हूं परन्तु मैं आज तक इस रहस्य को नहीं जान सका कि एक बच्चा तीसरी मंजिल से नीचे गिरता है और सुरक्षित रहता है। दूसरी ओर एक पैदल यात्री ठोकर खाकर गिर जाता है और उसकी मृत्यु हो जाती है। महात्मा जी ने इस वार्ता को सुना कर उस पर टिप्पणी की थी। उन्होंने कहा था कि इन घटनाओं में मनुष्य का प्रारब्ध व इस जन्म के सद्कर्म सहयोगी होते हैं।

महात्मा दयानन्द जी का तपोवन आश्रम का कार्यकाल जो सन् 1989 में उनकी मृत्यु से कुछ समय पूर्व तक का रहा, उसमें उन्होंने वैदिक साधन आश्रम की तन, मन व धन से सेवा की। उनके समय में आश्रम बुलन्दियों पर था। हमने देखा है कि उत्सवों के दिनों में आश्रम का परिसर श्रद्धालुओं से पूरा भर जाता था। वैदिक विद्वान भी उच्च कोटि के आते थे। किसी को यह पता नहीं होता था कि आश्रम का प्रधान और मंत्री कौन है। हम महात्मा जी को ही आश्रम व इसका सर्वेसर्वा अनुभव करते थे। हमने महात्मा जी का यह गुण भी अनुभव किया है कि वह आश्रम के किसी अधिकारी की चापलूसी या अनावश्यक प्रशंसा नहीं करते थे। वह सबकी वास्तविक स्थिति को जानते थे। फिर भी सुधार की दृष्टि से वह जो कहना होता था, कह देते थे। दिल्ली से ऋषि भक्त रामलाल मलिक जी उनके प्रति श्रद्धा व निष्ठा में भरकर तीन से पांच बसे लेकर आश्रम के उत्सवों पर आते थे। सभी दिल्ली वासियों को खूब दान देने की प्रेरणा करते थे। स्वयं भी देते थे और दिल्ली से धनसंग्रह करके लाते थे। श्री रामलाल मलिक जी जैसे ऋषि भक्त अब देखने को नहीं मिलते। आश्रम के प्रधान श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी, मंत्री इंजी. प्रेमप्रकाश शर्मा जी, स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी तथा आचार्य आशीष दर्शनाचार्य जी उच्च कोटि के ऋषि भक्त व वैदिक धर्म के प्रति निष्ठावान विभूतियां हैं जिस कारण आश्रम वर्तमान समय में भी प्रगति के पथ पर आरूढ़ है। हां हमें भविष्य के लिये सुयोग्य अधिकारियों सहित स्वामी जी और आचार्य जी के विकल्पों का अभाव खटकता है। यह भी बता दें महात्मा जी देश के अनेक भागों में जाकर भी वृहद यज्ञ कराया करते थे। लगभग 1980 में चेन्नई के निकट के एक गांव मीनाक्षीपुरम् का पूरा गांव धर्मान्तरित कर मुसलमान बना दिया गया था। आर्यसमाज ने इस चुनौती को स्वीकार किया था। महात्मा जी ने वहां जाकर यज्ञ का आयोजन किया था और सब ग्रामवासियों को शुद्ध कर पुनः ऋषियों के धर्म में लौटाया था। उन दिनों इस घटना से सम्बन्धित अनेक समाचार, लेख व चित्र सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे थे जिन्हें हमने देखा व पढ़ा था। महात्मा जी के इस योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

महात्मा दयानन्द जी के अनुज श्री विश्वम्भर नाथ मलहोत्रा जी के सुपुत्र श्री शशिमुनि आर्य जी ने महात्मा जी के कुछ लेखों का एक संग्रह वैदिक साधन आश्रम, आर्यनगर, रोहतक (मोबाइलः 9899364721) से उपदेश–माला के नाम से प्रकाशित कराया है। इसमें दिये सभी विषय आध्यात्मिक हैं। आरम्भ में प्राक्कथन के रूप में महात्मा जी की सुपुत्री श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा जी के कुछ शब्द दिये

गये हैं जिनसे महात्मा जी के कुछ गुणों पर प्रकाश पड़ता है। वह लिखती हैं **'जब कभी हम पूज्य श्रद्धेय महात्मा दयानन्द जी के जीवन पर विचार करते हैं तो हमें लगता है कि उनका जीवन सरल, सादा, कोमल व गम्भीरता से युक्त था। विचारों में समुद्र–सी गहराइयां थीं, जिन्हें हम उनके जीवन काल में समझ ही नहीं पाये। जब हम उनके प्रवचन सुनते थे या वह वेदमन्त्रों के अर्थ करते थे तो जनता मन्त्रमुग्ध हो जाती थी। एक–एक शब्द के, व्यवहारिक व आध्यात्मिक, कई–कई अर्थ निकालते थे। भावुक हृदय की गहराइयों से निकले शब्द सुनते ही रहने का मन करता था। कठिन से कठिन मंत्र को जीवन के प्रति प्रेरणादायक बनाकर सरल भाषा में जनता को समझाने की अद्‌भुत कला उनमें थी। यह सब प्रसाद उन्हें अपने सच्चे गुरु व प्रभु से मिला था क्योंकि उन्होंने अपना जीवन उनके चरणों में अर्पण कर दिया था। भक्ति की पराकाष्ठा समर्पण में है और अन्तिम सीढ़ी भी ईश भक्ति ही है। वह पूर्णरूप से समर्पित थे। उन्होंने ऋषि ऋण उतारने का पूर्ण प्रयास अन्तिम श्वांस तक किया। हमने उनके जीवन की कई घटनाओं में देखा कि वह अपने प्रति वज्र से भी कठोर थे परन्तु जनता जनार्दन के लिये अति कोमल हृदय थे। महात्मा दयानन्द जी के सम्बन्ध में उनकी श्रद्धांजलि पर पूज्य स्वामी विद्यानन्द विदेह जी ने कहा था कि महात्मा जी सच्चे ईश्वरभक्त व गुरुभक्त थे और गृहस्थ की मर्यादाओं से परिपूर्ण थे। सादा, सरल जीवन होने से हम कह सकते हैं कि वह 'गुदरी के लाल' थे। उर्दूभाषी होते हुए भी जब वह सेवानिवृत्त होकर आये तो आस्था व श्रद्धा के साथ वेदों में ऐसे घुसे कि न दिन देखा न रात, हर समय उनके हाथ में वेद–भगवान् और लेखनी रहती थी। उसी कठोर तप से ही वह जनता के सामने आये। तपोमय जीवन ने उन्हें पूर्ण महात्मा बना दिया। वैदिक धर्म में विद्वानों की कमी नहीं है। विद्वता के साथ–साथ भक्ति का होना बहुत आवश्यक है। यह बात महात्मा जी के जीवन में पाई जाती थी। वे सदैव कहते थे, माली बनो मालिक नहीं। सेवक बनने में जो आनन्द है वह स्वामी बनने में नहीं है। सेवक की हर प्रकार की चिन्ता स्वामी को होती है। जीवन डोर प्रभु को सौंपकर तो देखो फिर क्या आनन्द है।'** महात्मा जी के भतीजे और उपदेश–माला पुस्तक के सम्पादक श्री शशिमुनि आर्य ने भी महात्मा जी पर अपने कुछ विचार लिखे हैं।

महात्मा दयानन्द जी का जीवन स्वाध्याय, ईश्वर भक्ति, साधना, यज्ञ तथा उपदेश आदि कार्यों में ही व्यतीत हुआ। वह सत्यनिष्ठ व यज्ञनिष्ठ थे। सत्याचरण की वह मूर्ति थे। वैदिक साधन आश्रम तपोवन उनके लगभग 15–19 वर्षों के सेवाकाल में सफलता की बुलन्दियों पर था। ईश्वर करे सभी ऋषि भक्त महात्मा दयानन्द वानप्रस्थी जी जैसे सत्यनिष्ठ, ऋषिभक्त, ईश्वर और वेदभक्त हो जायें जिससे आर्यसमाज अपने लक्ष्य पर आगे बढ़ सके। ओ३म् शम्।

बाघा जतिन

—स्वामी यतीश्वरानन्द जी

महान् क्रान्तिकारी बाघा जतिन को आज कम ही लोग जानते हैं पर क्रान्तिकारी युग का शायद ही कोई ऐसा क्रान्तिकारी होगा जिसने उनके जीवन, आदर्श, वीरता, मानवता, संगठन क्षमता और बलिदान से प्रेरणा न ली हो। इस महान क्रान्तिकारी दार्शनिक का जन्म 07 दिसम्बर 1879 को बंगाल के नदिया जिले के कुष्टिया क्षेत्र के कायाग्राम नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता उमेशचन्द्र मुखर्जी तथा माता शरद शशि थी। पिता घुडसवारी के शौकीन थे तथा माता उच्चकोटि की कवियित्री। पांच वर्ष की अवस्था तक जतिन्द्रनाथ मुखोपाध्याय अपने परिवार के पैतृक निवास साधूहाटी रहे। फिर माता की मृत्यु होने पर ये अपने ननिहाल आ गये। जतिन्द्रनाथ के मामा प्रसिद्ध वकील थे तथा उनके मुवक्किलों में रविन्द्रनाथ टैगोर भी सम्मिलित थे। इस प्रकार जतिन को बचपन से ही बौद्धिक वातावरण मिला। जतिन शरीर से बलवान थे तथा कस्बे में होने वाले नाटकों में प्रहलाद, ध्रुव, हनुमान आदि का अभिनय करते थे। 1895 में कलकत्ता सेंट्रल कॉलिज की प्रवेश परीक्षा पास कर इन्होंने ललित कला का अध्ययन किया तथा स्टेनो टाइपिंग सीखने लगे। साथ ही ये स्वामी विवेकानन्द से साक्षात्कार किया करते थे जिनके राष्ट्रवाद व मानवतावाद का जतिन पर गहरा प्रभाव पड़ा। विवेकानन्द ने इन्हें युवा स्वयं सेवकों का संगठन बनाने से पहले काम—शक्ति को जीतने का मंत्र दिया तथा ऐसे युवा ढूंढने को कहा जो लोहे की मांसपेशियों और इस्पात की तंत्रिकाओं वाले हों और अकाल—महामारी—बाढ़ में जरूरतमंदों की सहायता करने को तत्पर हों। स्वामी विवेकानन्द ने जतिन को अम्बु गुहा की उस व्यायामशाला में भेजा जहाँ कभी खुद विवेकानन्द पहलवानी किया करते थे। जतिन 1899 में वकील प्रिंगल कैनेडी (जिनकी पत्नी व पुत्री नौ वर्ष बाद गलती से खुदीराम बोस के बम से मारे गये थे) के सचिव के रूप में काम करने लगे और मुजफ्फरपुर आ गये। 1900 में जतिन का इदुंबाला से विवाह हो गया। इनके चार संताने हुई। बड़े पुत्र की अल्पायु में मृत्यु हो गई। सन् 1906 में ये हरिद्वार की तीर्थयात्रा पर गये तथा संत भोलानन्द गिरि से दीक्षा ली। वापस अपने पैतृक गाँव आने पर इन्हें पता चला कि एक बाघ ने गाँव में आतंक मचा रखा है। मार्च 1906 में इनका उस बाघ से सामना हुआ। इन्होंने बाँया हाथ बाघ के मुँह में देकर दाहिने से उसके गले में खुखरी मारकर उसका अन्त कर दिया। ये खुद भी बुरी तरह घायल हो गये। इनका ऑपरेशन करने वाले सर्जन डॉ० सर्वाधिकारी ने इनकी बहादुरी पर एक लेख लिखा और बंगाल सरकार ने इन्हें एक शील्ड बनवाकर दी जिसमें बाघ मारने की घटना को चित्रित किया गया था। तब से इनका नाम बाघा जतिन हो गया।

बाघा जतिन ने सन् 1900 से क्रान्तिकारी गतिविधियों को संगठित रूप देना शुरू कर दिया था। ये अनुशीलन समिति के संस्थापकों

में से थें। 1903 में अरविन्द घोष से मिलने के बाद इन्होंने भारतीय सैनिकों को सशस्त्र विद्रोह के लिए तैयार करने की योजना बनानी शुरू कर दी थी। 1905 में प्रिन्स ऑफ वेल्स की भारत यात्रा के दौरान जतिन ने वायसराय के पास ही भारतीय स्त्रियों को परेशान कर रहे ब्रिटिश सैनिकों को मारपीट कर गिरा दिया ताकि वायसराय का ध्यान ब्रिटिशों के भारत की आम जनता के प्रति दुष्टतापूर्ण व्यवहार की ओर आकर्षित किया जा सके। अगले वर्ष जतिन ने देवघर में एक बम फैक्ट्री स्थापित की तथा एक ऐसा संगठन विकसित किया जो विक्रेन्दीकृत था। इसमें बचाव व राहत कार्य करने वाले स्वयं सेवक भी थे तथा क्रान्तिकारी भी। अप्रैल 1908 में एक बार सिलिगुडी रेलवे स्टेशन पर कई ब्रिटिश सैनिकों से इनका झगड़ा हो गया जिसमें इन्होंने अकेले ही सबको पीटकर भगा दिया। अंग्रेजों ने इस प्रकरण में अपनी बेइज्जती के डर से मुकदमा वापस ले लिया पर उस समय भारतीयों के लिये यह आत्मविश्वास जगाने वाली घटना साबित हुई। 1908 में खुदीराम बोस व प्रफुल्ल चाकी द्वारा मुजफ्फरपुर बम काण्ड की घटना के बाद जो अलीपुर बम केस का मुकदमा चला उसमें तीस अभियुक्तों को पकड़ा गया। जतिन इनमें नहीं थे और इन्होंने 'जुगान्तर' समिति का नेतृत्व अपने हाथों में ले लिया। जल्दी ही बिहार, बंगाल, उड़ीसा व उत्तर प्रदेश में इन्होंने संगठन की कई शाखाएँ स्थापित कर दी। फिर इन्होंने सुन्दरबन क्षेत्र में भूमि को लीज पर लिया ताकि पुलिस से बचते फिर रहे क्रान्तिकारियों को संरक्षण दिया जा सके। साथ ही कृषि, लघु उद्योग, प्रौढ़ शिक्षा, चिकित्सा के भी केन्द्र स्थापित किये। इसके साथ ही इन्होंने 1908 से 1910 के बीच क्रान्तिकारी गतिविधियों के लिए धन जुटाने के लिए टैक्सियों की सहायता से बैंकों में तथा सरकारी शस्त्र ले जा रहे वाहनों में डकैतियां डाली, क्रान्तिकारियों के विरूद्ध काम करने वाले पुलिस अधिकारियों, वकीलों व गद्दार भेदियों की हत्याएं करवाई। 24 जनवरी 1910 को पुलिस उपनिरीक्षक शमसुल आलम की हत्या में पकड़े गये बिरेन दत्त गुप्त ने इनका नाम ले दिया। अगले दिन वायसराय मिन्टों ने इस 'क्रान्तिकारी आत्मा' के प्रति नाराजगी जाहिर की और 27 जनवरी 1910 को बाघा जतिन को गिरफ्तार कर लिया गया। पर सबूतों के अभाव में इन्हें छोड़ देना पड़ा। कुछ दिन बाद इन्हें हावड़ा गैंग केस में ब्रिटिश राज के विरूद्ध भारतीय रेजीमेंटों को भडकाने के आरोप में पुनः गिरफ्तार कर लिया गया। हावड़ा जेल में मुकदमे की सुनवाई के दिनों में इन्होंने बंगाल भर से क्रान्तिकारियों को संगठित करने का प्रयास किया। इनके विरूद्ध कोई सबूत नहीं था अतः इन्हें पुनः छोड़ना पड़ा। वायसराय हार्डिंग ने भारत सचिव को लिखा कि केवल एक ही व्यक्ति (जतिन) पर मुकदमा चलाया जाता और 46 को छोड़ दिया जाता तो बेहतर होता। 1 फरवरी 1911 में रिहा होने के बाद जतिन ने सारी क्रान्तिकारी गतिविधियां को रूकवा दिया ताकि सशस्त्र संघर्ष के लिये संगठन को मजबूत बनाया जा सके।

जर्मनी के युवराज की कलकत्ता यात्रा के दौरान बाघा जतिन उनसे मिले और उनसे यह वायदा लिया कि जब ब्रिटेन व जर्मनी में युद्ध शुरू हो तो जर्मनी भारत के क्रान्तिकारियों को

हथियार उपलब्ध करायेगा। तब जतिन घर में नजरबंद थे पर इन्होंने जेसोर से झेनाइडाह के बीच बन रही रेलवे लाइन का ठेका लिया तथा घोड़ें और साइकिल पर बंगाल व अन्य राज्यों में घूमने लगे। तब ये परिवार के साथ अपने गुरु भोलानन्द गिरी से मिलने हरिद्वार भी आये। इन्होंने वृन्दावन जाकर निर्लम्ब स्वामी (सन्यासी बनने से पहले प्रसिद्ध क्रान्तिकारी जतिन्द्रनाथ बनर्जी) से भेंट की जिन्होंने इन्हें पंजाब व उत्तर प्रदेश के क्रान्तिकारियों के सम्पर्क सूत्र उपलब्ध कराये। फिर ये 1913 में दामोदर नदी में आई भीषण बाढ़ में राहत व बचाव कार्य में जुट गये। इनकी कर्म शक्ति से प्रभावित हो रासबिहारी बोस बनारस से इनसे मिलने पहुँचे। बोस ने इनके व्यक्तित्व में दुर्लभ नेतृत्व क्षमता के दर्शन किये तथा इनके साथ मिलकर कलकत्ता के ऐतिहासिक फोर्ट विलियम नामक किले में तैनात भारतीय सैनिकों के सशस्त्र विद्रोह की योजना पर काम करना शुरू कर दिया। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लाला हरदयाल, तारकनाथ दास, गुरनदित्त कुमार इनके सम्पर्क में रहने लगे तथा जतिन ने गदर आन्दोलन व जर्मन सहायता से विद्रोह को जोड़ना शुरू कर दिया। विरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय की बर्लिन कमेटी की सहायता से जर्मन हथियार माँगने की योजना पर भी काम चल रहा था। इन अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं के प्रमुख सूत्रधार बाघा जतिन थे। जतिन के लिखित निर्देश पर विष्णु गणेश पिंगले और करतार सिंह सराभा रासबिहारी बोस से मिले तथा पंजाब व यू.पी. में विद्रोह को हवा देने का काम करने लगे। तब तक पुलिस की गतिविधियां भी काफी बढ़ गई थी। अतः यह तय किया गया कि जतिन को किसी सुरक्षित जगह चले जाना चाहिए। उड़ीसा के तट पर बालासोर (बालेश्वर) वह जगह थी जहाँ भारतीय विद्रोह के लिए जर्मन हथियारों से लदे जहाजों को उतरना था। जतिन ने बालासोर पहुँचकर कलकत्ता की हैरी एण्ड सन्स कम्पनी की एक शाखा 'यूनिवर्सल एम्पोरियम' नाम से बालासोर में खोल दी। यह देश–विदेश के क्रान्तिकारियों की सूचनाएं पहुँचाने का केन्द्र बन गया। अप्रैल 1915 में जतिन ने नरेन भट्टाचार्य (भविष्य के मानवेन्द्र नाथ राय, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के संस्थापक) को जकार्ता भेजा जहाँ जर्मन अधिकारियों से आर्थिक व सामरिक मदद के संदर्भ में समझौता होना था। उस समय चेक जासूस ई.बी. वोस्का को इस योजना का पता चल गया। वोस्का ने चेक नेता टी.जी. मसारिक (चेकोस्लोवाकिया के पहले राष्ट्रपति, 1918 से 1935 तक) को यह भेद बताया। मसारिक ने अमेरिकी अधिकारियों तक यह बात पहुँचा दी तथा अमेरिकियों ने ब्रिटिश अधिकारियों को शीघ्र होने वाले सशस्त्र विद्रोह के बारे में चेतावनी दे दी। ब्रिटिश अधिकारियों ने चटगाँव से उड़ीसा तक सारी तटीय सीमा सील कर दी तथा हैरी एण्ड सन्स पर छापा मारा। तब जतिन बालासोर से पचास किलोमीटर दूर काप्तीपाडा गाँव के बाहर अपने चार साथियों के साथ रूके हुए थे। जतिन को पुलिस के छापों की जानकारी मिल गई परन्तु इन्होंने बीमार जतिश व निरेन को भी अपने साथ ले जाने की ठानी। तब तक सी.आई.डी. ने इनके ठिकाने का पता लगा लिया था। उच्च यूरोपीय अधिकारी भारी

अर्धसैनिक दल के साथ काप्तीपाडा पहुँचे, मयूरभंज राज्य के चन्दबली से एक बड़ी सैनिक टुकड़ी भी आ गई। तब जतिन व उनके साथी मयूरभंज के जंगल व पहाड़ों से होते हुए दो दिन बाद बालासोर रेलवे स्टेशन पहुँचे। पुलिस ने पांच डकैतों पर ईनाम घोषित कर रखा था इसलिए आस–पास के गाँव वाले भी उन्हें ढूंढ रहे थे। छोटी–मोटी झडपों के बाद 09 सितम्बर 1915 को पांचों क्रान्तिकारी साथी मानसूनी बारिश में जंगल व दलदल पार करते हुए बालासोर के चाशाखण्ड में एक पहाड़ी के पास खाई में पहुँच गये। यहाँ इनके साथियों ने इनसे सुरक्षित स्थान पर आगे जाने को कहा पर इन्होंने अपने साथियों को छोड़कर जाने से इन्कार कर दिया। सरकारी फौज ने इन पर दोनों ओर से आक्रमण किया। एक तरफ माउजर थामे पांच क्रान्तिकारी थे और दूसरी तरफ आधुनिक राइफलों व बमों से लैस सेना व पुलिस! सवा घंटे चली गोलीबारी में पुलिस व सेना के कई लोग मारे गये व घायल हुए। क्रान्तिकारियों में चित्तप्रिय राय चौधरी शहीद हो गये जबकि जतिन व जतिश गम्भीर रूप से घायल हो गये। मनोरंजन सेन गुप्ता व निरेन गोलियां समाप्त होने के बाद गिरफ्तार कर लिये गये। जब जतिन पानी–पानी कराह रहे थे तो इनके साथी इन्हें नदी की ओर ले जाने लगे। तक कलेक्टर ने गोलाबारी बंद करने का निर्देश दिया तथा इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। अगले दिन 10 सितम्बर 1915 को बालासोर अस्पताल में बाघा जतिन की मृत्यु हो गई। इस प्रकार इस महान क्रान्तिकारी ने वह कर दिखाया जो अपने साथियों से एक बार कहा था– "हम देश को जगाने के लिये मरेंगे।"

बाद में पुलिस अधिकारी, चार्ल्स टेगार्ट ने कहा– 'मुझे अपना कर्त्तव्य निभाना था लेकिन मेरे मन में बाघा जतिन के लिये अपूर्व सम्मान है।'

अब विक्टोरिया मैमोरियल के पास जतिन की घोड़े पर बैठे हुए मूर्ति लगी है जो इनके विशाल व्यक्तित्व का प्रतिबिंब है।

आज बंगाल में बाघा जतिन को एक महान क्रान्तिकारी के रूप में याद किया जाता है। बंगाल में इनके बाद के सभी क्रान्तिकारी इनके संघर्ष व बलिदान के प्रति अपूर्व सम्मान रखते थे और इनसे प्रेरणा लेते थे।

"अगर वोस्का भारत के इतिहास में हस्तक्षेप न करते, तो आज कोई महात्मा गाँधी का नाम न जानता और भारत के राष्ट्रपिता बाघा जतिन होते।"

–रोस हेड्विसेक (चेक मूल के अमेरिकी प्रकाशक)

"यदि जतिन अंग्रेज होते तो अंग्रेज ट्रेफाल्गर स्क्वायर पर नेलसन की मूर्ति के साथ उनकी मूर्ति लगाते।"

–चार्ल्स टेगार्ट (ब्रिटिश पुलिस अधिकारी)

"बाघा जतिन एक दिव्य व्यक्तित्व थे।"

–महात्मा गाँधी

धन्य हो ऋषि दयानन्द जी

–पं उम्मेद सिंह विशारद
वैदिक प्रचारक

महर्षि दयानन्द जी द्वारा स्थापित आर्य समाज आज सम्पूर्ण विश्व में अपना परचम फहरा रहा है। एक दीप करोड़ों–करोड़ों दीपों को प्रज्जवलित कर रहा है। –सम्पादक

महाभारत काल के पांच हजार वर्षों बाद समस्त बुराइयों को दूर करने वाले मात्र महर्षि दयानन्द सरस्वती जी पहले ऋषि हुए। सन् 1883 के दीपावली के दिन अनन्त यात्रा में जाते हुए करोड़ों मानवों में आत्मिक ऊर्जा के करोड़ों दीप जला गये। धन्य हो ऋषि दयानन्द जी।

युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सत्य ईश्वरीय ज्ञान व वेदो के सत्य अर्थो के मार्ग से हजारों वर्षों से सुसुप्त करोड़ों मानवों की आत्माओं में आत्म ज्ञान के दीप जलाने वाले पहले ऋषि थे।

जब–जब सृष्टि में ईश्वरीय वाणी वेद ज्ञान का सत्य अर्थो के अभाव से मानव जगत में अनेक बुराइयां उत्पन्न होती है, तब–तब मोक्ष से लौट कर महापुरुषों का जन्म होता है। ऐसे महापुरुष विश्वात्मा के वाहन होते है। किन्तु वह परमात्मा के अवतार नहीं होते, अपितु उनमें समाज की बुराइयों को मिटा देने के लिए आत्मा शक्ति का संचार होता है। अठारवीं व उन्नीसवीं सदी में भारत की जनता की आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक बुराइयों को दूर करने के लिए विषय परिस्थितियों में प्रत्येक चुनौतियों को स्वीकार करके रण क्षेत्र में महर्षि दयानन्द उतर पड़े थे।

महर्षि दयानन्द समय के दास बनकर नहीं आये थे किन्तु समय को अपना दास बनाने के लिए आये थे। जमाने की गर्दन पकड़कर सत्य मार्ग पर चलाने आये थे। महर्षि दयानन्द जी जब रण क्षेत्र में उतरे तो उन्हें चारों तरफ ललकार ही ललकार सुनाई दी, चारों ओर चुनौतियां ही चुनौतियां नजर आ रही थी। पांच चुनौतियां उनके सामने मुख्य थी जो निम्न प्रकार से है।

आश्चर्य होता है

युग में एक ऐसा ऋषि दुनिया को मिला, जिसने संसार की तमाम बुराइयों को दूर करने का बीड़ा उठाया था। ऐसे महापुरुष को हम देव कहे या ऋत देव कहे। मेरे ऋषि ने ईश्वरीय व्यवस्था व ईश्वरीय शिक्षा वेदों की ओर संसार को लौटाया, और संसार के हित के लिये अपने प्राणों की आहुति दे दी। संसार के मनीषियों को निष्पक्ष चिन्तन करना चाहिए।

प्रथम चुनौती भारत को विदेशियों से मुक्त कराने की थी

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने पहली चुनौती पर विचार किया कि दयानन्द क्या तुम

अपनी मातृ भूमि को विदेशियों का गुलाम रहने दोगे? अन्दर से आवाज आई मैं विदेशी राज्य को बर्दाश्त नहीं करूँगा। उन्होंने राजस्थान के राजाओं को अंग्रेजी शासन के प्रति विद्रोह करने के लिए तैयार करना शुरू कर दिया। दयानन्द जी के जीवन का बड़ा भाग भारत माता को स्वतंत्र कराने की योजना में बीता। उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा स्वराज्य सर्वोपरि होता है। महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थ प्रकाश में लिखते है कि जो उन्नति करना चाहो तो आर्य समाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा। क्योंकि हम और आपको उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। इसलिए जैसा आर्य समाज आर्यवर्त्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता। राष्ट्र को विदेशियों से मुक्त कराने की जिस चिंगारी का बीजारोपण महर्षि दयानन्द जी ने किया था उसकी प्रेरणा से लाखों– लाखों वीरो ने भारत माता के लिए अपना बलिदान देकर भारत माता को बेड़ियों से मुक्त कराया था।

द्वितीय चुनौती वेदों के रूढ़ी अर्थों को शुद्ध करने की थी

भारत का धर्म वेदों से बंधा हुआ था। क्योंकि महर्षि दयानन्द जी से पूर्व विद्वानों ने वेदों के मन्त्रों के अर्थ इतिहास परक किये थें शंकराचार्य, सायणाचार्य, महीधर, जेकोवी, मेक्समूलर आदि विद्वानों ने वेदों के अर्थ किये कि वेद स्त्रियों को नहीं पढ़ाना चाहिए, शूद्रों को भी वेद पड़ने का अधिकार नहीं है। वर्ण व्यवस्था जन्म से होनी चाहिए। दलित वर्ग को समाज में दास के रूप में रहना चाहिए। कल्पित देवताओं की पूजा करनी चाहिए और देवी देवताओं के नाम पर पशु बलि देनी चाहिए। भूत प्रेत जादू–टोना वेदों में लिखा है। उन्होंने वेदों के रूढ़ी अर्थ करके सम्पूर्ण समाजवादी व्यवस्था को अंधविश्वास के कुएं में ढकेल रखा था। महर्षि दयानन्द जी ने वेदों के रूढी अर्थो पर प्रहार किया और निरूक्त शास्त्र के अनुसार उन्होंने सिद्ध किया कि वेदों में जो कुछ लिखा है वह उसी को ईश्वर विधान मानते थे, क्योंकि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। वे संस्कृत के अगाध पंडित थे। उन्होंने सिद्ध किया कि वेदों में स्त्री और शूद्रों को वेद पड़ने का अधिकार है, वेदों में मूर्ति पूजा नहीं है, वेदों में पशु बलि नहीं है, वेदों में तंत्र मंत्र प्रेत पूजा नहीं है, वेदों में जाति व्यवस्था नहीं है वर्ण व्यवस्था है। वेदों में कोई भी धार्मिक, सामाजिक, अंधविश्वास नहीं है। उन्होंने सिद्ध किया कि ईश्वर ने सृष्टि आदि में ऋषियों की आत्मा में वेदों का ज्ञान, सृष्टि क्रमानुसार, विज्ञान के अनुसार दिया है। इसलिए वेदों के मन्त्रों के अर्थ भी ईश्वरीय विधान के अनुसार है। वेद पहले बने और इतिहास बाद में, इसलिए वेदों के अर्थ रूढी नहीं है।

तृतीय चुनौती धार्मिक अंधविश्वासों द्वारा हानि की थी

कतिथ हिन्दु धर्म की आधारशिला वेद थे।

महर्षि दयानन्द जी ने वेदों के रूढ़िवादी अर्थों पर प्रहार कर सारे दृष्टिकोण को बदल दिया। ऋषि अपने ग्रंथों में लिखते है कि धर्म परमात्मा द्वारा बनाया है। और मत मनुष्यों द्वारा बनाए जाते है। वास्तव में जिन्हें समाज धर्म का नाम देता है वह मत है, और प्रत्येक मतों में भिन्नता है, किन्तु ईश्वरीय धर्म एक ही रहता है। ईश्वरीय धर्म जैसे सूर्य, चन्द्रमा, ऋतुएं, पृथ्वी, तत्व, रात–दिन, जन्म–मरण, वनस्पति, प्रत्येक पदार्थ नियम में सदैव रहते है, और अपने स्वरूप को कभी नहीं बदलते जैसे आंख का देखना, कान का सुनना कभी नहीं बदलता, और मृत्यु के उपरान्त दूसरे जन्म में वही प्रतिक्रिया होती है, उसी को ईश्वरीय धर्म कहते है। और मत देश काल परिस्थिति से बनते और मिटते रहते है। आर्य समाज और वैदिक धर्म को छोड़कर आज सारा संसार मतों को धर्म मानकर धार्मिक अंधविश्वास के पाटों में पिस रहा है। महर्षि दयानन्द जी ने धर्म का वास्तविक स्वरूप सबके सामने रखा, और तमाम धार्मिक अंधविश्वासों को समाप्त करने के लिए सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ लिखा और आर्य समाज रूपी क्रांतिकारी संगठन बनाया।

चतुर्थ चुनौती सामाजिक रूढिवाद को समाप्त करने की थी

हजारों वर्षों की गुलामी के कारण भारतीय समाज में मानवता की भावना समाप्त हो रही थी, फलस्वरूप, दास प्रथा, दहेज प्रथा, सती प्रथा, बलि प्रथा, जाती–पाती प्रथा, छुआ–छूत प्रथा, काल्पनिक देवताओं की पूजा प्रथा, शूद्रों और नारियों को न पढ़ाने की प्रथा, मृत्यु भोज, पिण्ड दान प्रथा आदि अनेक घातक सामाजिक बुराइयों से भारत की जनता त्रस्त थी। महर्षि जी ने इस वेदना को समझा और उक्त तमाम बुराइयों के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया। उन्होंने हिन्दु को हिन्दु रहते नये रंग में रंग दिया और सभ्य समाज की रूप रेखा बना दी।

पंचम चुनौती राजनैतिक क्षेत्र में रूढिवाद पर प्रहार किया

राजनैतिक क्षेत्र में जिसका राज चला आ रहा था वही ठीक है। यह रूढी विचार थे। महर्षि दुखित मन से सत्यार्थ प्रकाश में लिखते है कि अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य प्रमाद, परस्पर विरोध से अन्य देशों में राज्य करने की कथा ही क्या कहनी, किन्तु आर्यवर्त में भी आर्यों का अखण्ड स्वतंत्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं हैं जो कुछ है सभी विदेशियों से पदाक्रान्त हो रहा है। जब दुर्दिन आता है तब देशवासियों को अनेक प्रकार का दुख भोगना पड़ता है। कोई कितना ही करें परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है यह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत मतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर माता–पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं हो सकता। 'जो है ठीक है' इसी रूढ़िवादी भावना पर ऋषि दयानन्द जी ने धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्र में सीधी चोट की। इसलिए वह तमाम बुराइयों को मिटाने वाले पहले ऋषि हुए।

पद्मरागा का अश्रुतपूर्व तप

—ईश्वरी प्रसाद प्रेम

युवा शिरोमणि महावीर हनुमान की ओजस्वी वक्तृता के क्रान्ति स्वर जैसे सम्पूर्ण वानर राष्ट्र में गूँज उठे। हनुमान की तेजस्वी वाणी को, उसके क्रान्ति—आह्वान को सारे राष्ट्र ने सुना और सुना पद्मरागा ने भी।

पद्मरागा! महाराज बाली के अनुज सुग्रीव के सेनाध्यक्ष नील की एक मात्र पुत्री! मानो किन्हीं विशेष तन्तुओं से उसका निर्माण हुआ हो। बचपन से ही सर्वथा निस्पृह, निरोह अपने आप में डूबी सी, खोई सी। चरम सौन्दर्य के साथ ही प्रभु—परायणता, शिष्टता, शालीनता और विनम्रता की महानिधि सँभाले, यौवन की देहलीज में प्रविष्ट। एक ही चाव था उसका—वेदाध्ययन। एक ही कार्यक्रम था उसका—राष्ट्रोद्धार—चिन्तन। यह सब पूर्व जन्म के संस्कारों का ही परिणाम था।

पद्मरागा अब पर्याप्त सयानी हो चली है। कितनी ही बार उसकी माता स्वयं भी और कई बार उसकी आचार्या पण्डिता बुद्धिवन्ती द्वारा उसे अनेकों वीर पण्डितों के चित्र बताकर उनमें से किसी के साथ विवाह करने की प्रेरणा कर चुकी थीं, पर निष्फल। यों माता—पिता पद्मरागा के आचार—व्यवहार, विद्वत्ता और राष्ट्र प्रेम के लिये भर्वानुभूति करते हुए भी उसके भविष्य के विषय में स्वभावतः चिन्तित—प्राय रहने लगे थे।

पद्मरागा अपने कमरे में अकेली है। अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त का पाठ कर रही है, वह। मातृभूमि और धरती माता के प्रति भक्ति की तरंगें उसके अन्तःर्मानस में हिलोरें ले रही हैं। "प्रभो! वह मंगल घड़ी कब आयेगी जब मेरे महान् राष्ट्र की बौद्धिक दासता समाप्त हो यहाँ एक मात्र विश्व संस्कृति—वैदिक संस्कृति का साम्राज्य होगा, भगवन्! क्या मैं राष्ट्रोद्धार के इस महायज्ञ में अपनी हवि दे सकूँगी? और तभी जैसे राष्ट्र के सम्पूर्ण वायु मण्डल में तैरते हुए युवक नेता हनुमान के ये स्वर उसके अन्तः प्रदेश में प्रतिध्वनित हो उठे, मानो आकाशवाणी हुई। "समय आ गया है जब मातायें अपने वीर पुत्रों को, बहिनें अपने नृसिंह भाइयों को और देवियाँ—कुल वधुयें अपने सिन्दूर को राष्ट्र यज्ञ की हवि बनायें— शत—सहस्त्र बहिनों के सिन्दूर, सतीत्व और सम्मान की रक्षा के लिये।"

पुस्तक खुली की खुली थी। पद्मरागा अब विचार—लोक में थी। "हमारे युवक नेता ने आह्वान किया है। पर मैं तो एक भाई के अभाव में बहिन का कर्त्तव्य भी नहीं निभा सकती। तब मैं ..... मैं कैसे राष्ट्र—यज्ञ में अपनी हवि दूँ? विचारों में वह गहरी डूब गई। और तभी घन—घटाटोप के बीच बिजली की भाँति सहसा एक विचार उसके हृदयाकाश में कोध गया। पर साथ ही एक प्रश्नवाचक चिन्ह भी— "क्या उस राष्ट्र देवता को अपने महाव्रत को भंग करने के लिए प्रेरित करना मेरे निकट जघन्यतम पाप नहीं होगा? उसका मन आत्म—ग्लानि से भर उठा, ऐसा दुस्सह दुर्विचार मेरे मन में आया भी तो क्यों? और उसने अपने अन्तर में गइराई से झाँका। उसे संतोष हुआ, उसके अन्तर के किसी कोने में भी भौतिक सुख भोग की लालसा का एक कण भी न था। तब

क्या हम लोग आजन्म किसी प्रकार का शारीरिक सम्बन्ध न रखकर केवल राष्ट्रोद्धार के समान व्रत के आधार पर परस्पर को वरण नहीं कर सकते? और विदुषी पद्मरागा को स्वयं ही समाधान भी मिल गया। अत्यधिक पवित्र उदात्त और उच्चादर्श होते हुए भी गृहाश्रम की शास्त्रीय मर्यादा के अनुकूल नहीं होगा, हमारा यह आचरण। तब.....तब एक ही मार्ग हैं–"मैं भी महावीर हनुमान की भांति आजन्म ब्रह्मचारिणी रहने का व्रत ग्रहण करूँ और वीर हनुमान की भाँति ही तपस्या की कठोरतम राह पर चलते हुए उसकी एक आदर्श बहिन के रूप में राष्ट्र जीवन में प्रवेश करूँ। क्या राष्ट्र के महायज्ञ में मेरी यह हवि एक सुन्दर हवि न होगी? पद्मरागा को समाधान मिल चुका था।

इन्हीं विचारों में डूबती उतरती वह पुनः पृथिवी सूक्त के पारायण में निमग्न हो गई। इसी बीच उसकी पूज्या आचार्या–पण्डिता बुद्धिवन्तीजी ने उसके कमरे में प्रवेश कर उसे चौंका दिया। अपनी प्रिय शिष्या को वेदाध्ययन में निंरत पा आचार्य जी को परम प्रसन्नता हुई। पद्मरागा ने चरण स्पर्श किया। अपनी शिष्या को आज विशेष प्रसन्न मुद्रा में देखकर आचार्या जी आशिष के वचन भी भूल, बोलीं 'पुत्री! यों आज तुम्हारी प्रसन्नता का क्या कारण हो सकता है?' 'आचार्याजी! क्या आपने नहीं सुना? वानर राष्ट्र को बौद्धिक दासता से विमुक्त कर परम पवित्र वैदिक संस्कृति का ध्वज–फहराने के लिए अंजनी कुमार बजरंगी महावीर हनुमान ने क्रान्ति का बिगुल बजाया है। और तब इस सन्दर्भ में उसने अपना सम्पूर्ण मनोगत आचार्याजी को प्रगट कर दिया।

आचार्या जी एक बार तो जैसे स्तम्भित रह गई, वह सब सुनकर। पर वे अपनी शिष्या के स्वभाव और निश्चय की दृढ़ता के विषय में जानती थीं, अतः केवल इतना ही कह सकी– 'पुत्री! तुम्हारा विचार निश्चित ही शुभ है। पर क्या तुम जानती हो यह राह कितनी दुरूह और कितनी अगम्य है, विशेषतया स्त्रियों के लिये।

'आचार्या जी!' बड़े विनीत स्वर में पद्मरागा कह रही थी– 'तब क्या, मुझे यह मानना चाहिए कि इतने समय आपके श्री चरणों के सानिध्य में रहकर भी आप अपनी शिष्या को नहीं जान सकी हैं? और नारी। क्षमा करें आचार्या जी, आपने ही तो एक बार बताया था कि वह महाशक्ति है। वह पुरुष की जननी ही नहीं निर्मात्री भी है। वह पुरुष की प्रेरणा स्त्रोत है– पत्नी के रूप में, माँ के रूप में और एक बहिन के रूप में भी। नारी जिस क्षेत्र में भी दृढ़ निश्चय से आगे बढ़े, आश्चर्यजनक उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकती है। पूज्या आचार्याजी! क्या आपने ही नहीं बताया था कि ऋषियों की भाँति अनेकों ऋषिकाओं ने भी पवित्र वेदों के मंत्र दर्शन तक का सौभाग्य लाभ किया है? फिर रणक्षेत्र या राजनीति के क्षेत्र में भी नारी के क्या नहीं किया और क्या नहीं कर सकती? और आजन्म ब्रह्मचर्य रखने वाली ब्रह्मवादिनी नारियाँ भी तो इस महान् देश की मिट्टी में जन्म ले चुकी हैं। आप अपनी शिष्या पर विश्वास कीजिए आचार्या जी!

इसके आगे पण्डिता बुद्धिवन्ती जी के पास कहने को कुछ नहीं था, उन्होंने केवल इतना प्रस्ताव किया– पुत्री! ठीक है जब तुम्हारा ऐसा ही ध्रुव निश्चय है तो मैं किसी प्रकार तुम्हारी माताजी और पिताजी को संतुष्ट करूँगी ही। किन्तु अपने निश्चय के क्रिवान्वन

एवं व्रत–दीक्षा के लिये तुम्हें महर्षि अगस्त्य की अनुमति और मार्ग दर्शन प्राप्ति के लिए मेरे साथ उनके आश्रम चलना होगा।

पद्मरागा की प्रसन्नता की कोई सीमा न थी। आचार्यजी ने उसकी माता को अपनी कुशलता से संतुष्ट किया, उनकी एकमात्र सन्तान द्वारा स्वयं को राष्ट्र हितार्थ समर्पित करने के सौभाग्य के लिए उन्हें पुण्यकृती बताया। अब पद्मरागा और आचार्या जी महर्षि आश्रम में उपस्थित थीं। सम्पूर्ण वृत्त जानकर मुनिवर अगस्त्य कह उठे– 'अब राष्ट्र और मानवता का भाग्योदय निश्चित है।' परीक्षा के लिये उन्होंने पद्मरागा से प्रश्न किया– 'पुत्रि! तुम महावीर हनुमान की आदर्श बहिन के रूप में अपने महान दायित्व को किस प्रकार निभाना चाहोगी?'

'आचार्य प्रवर! यह मार्ग दर्शन तो आपने ही करना है। किन्तु मैं सोचती हूँ कि पूज्य भ्राता हनुमान जी की भाँति ही उनके दल के हर सैनिक को तिलक दे मैं राष्ट्र रक्षार्थ प्रोत्साहित करूँगी। इतना ही नहीं वीर सैनिकों की माँओं, बहिनों और पत्नियों का मनोबल ऊँचा करते हुए अपने नेता महावीर का यह संदेश 'समस्त वानर प्रदेश में सुनाऊँगी और इस प्रकार वे माँ–बहिने हँसते–हँसते देश की युवा शक्ति को संस्कृति रक्षार्थ कर्म–क्षेत्र में भेज सकें, वह भूमिका तैयार करूंगी। युद्ध में हताहत वीरों के परिवारों की देवियों को सान्त्वना दूँगी, गुरुदेव! आपकी आज्ञा होगी तो मैं महिला कार्य–कर्त्रियों के तत्वावधान में घायलों की शुश्रूषा के लिए परिचर्या–शिविरों का संचालन करूंगी और यदि देश की युवा पीढ़ी का रक्त ठण्डा पड़ेगा तो वानर राष्ट्र की महिला शक्ति का कवि के शब्दों में आह्वान करूँगीः–

"सबल पुरुष यदि बनें भीरु तो मच जाये घमसान सखी,पन्द्रह कोटि असहयोगिनियाँ दहलादें ब्रह्माण्ड सखी।"

'धन्य, धन्य! पुत्री तुम धन्य हो! तुम्हारा यह विचार अत्यधिक महत्वपूर्ण है जिसका हम लोगों को ध्यान तक नहीं। निश्चय ही युद्ध केवल युद्ध भूमि पर नहीं लड़ा जाता। युद्ध देश की समूची जनता लड़ती है। किसान खेत में अधिक अन्न उपजाकर, वैज्ञानिक नये–नये आविष्कार करके, फैक्टरियों में युद्धास्त्रों का बड़े परिमाण में निर्माण करके और व्यापारी अनुचित मुनाफे का विचार छोड़, उचित मूल्यों पर देश की जनता की सभी वस्तुएं देकर युद्ध की विजय में अपना योगदान करता है। सामान्य नागरिक अनुशासन और युद्ध नियमों का पालन करते हुए, अफवाहों से बचकर मनोबल को ऊँचा बनाये रखकर भी वहीं कार्य करता है तो निश्चय ही घरों में बैठी हुई महिलायें अपने वीर पुत्रों, भाइयों और पतियों के लिये प्रभु से मंगल कामना करती हुई और उन्हें हंस–हंसकर रणक्षेत्र के लिए प्रस्थित करके राष्ट्र की महतो महान सेवा साधना करती हैं। पुत्रि! मुझे तुम्हारी कर्त्तव्य क्षमता में पूर्ण विश्वास है। और तब उन्होंने आचार्या बुद्धिवन्ती जी को सम्बोधित करके कहा– "आचार्या जी! ऐसी सुयोग्य, कर्त्तव्य परायण और राष्ट्र सेवार्थ सर्वस्व होम करने के लिए समर्पित शिष्या के निर्माण के लिए आपको कोटिशः धन्यवाद है आपकी शिष्या व्रत दीक्षा की पूर्ण अधिकारिणी है।"

महावीर हनुमान जो संयोग से उस समय आश्रम में ही उपस्थित थे, और निकट ही कहीं,

छिपकर यह सम्पूर्ण वार्ता सुन रहे थे, अब स्वयं को रोक न सके। सभी के आश्चर्य और कौतूहल को बढ़ाते हुए वे आचार्य चरणों में उपस्थित हो, महामुनि की आज्ञा से, पद्मरागा को सम्बोधित कर बोले– 'पद्मरागा बहिन! तुमने मेरे जीवन के सूनेपन को भर दिया है। यह ठीक है कि तुमने माँ अंजना के गर्भ से जन्म नहीं लिया है, पर तुम्हें एक धर्म बहिन के रूप में स्वीकार कर मैं स्वयं को गौरवान्वित पा रहा हूँ। बहिन का सम्बन्ध संसार के किसी भी अन्य सम्बन्ध से– हाँ, माँ और पत्नी के सम्बन्ध से भी कहीं अधिक पवित्र, अधिक मधुर, अधिक निःस्वार्थ और अधिक महनीय है। मुझे तुम्हारा भातृत्व सहर्ष स्वीकार है। बहिन! तुम्हारा कर्मक्षेत्र घर हैं। तुम्हारे भाव सर्वथा स्पृहणीय हैं, पर विश्वास रखो तुम्हें युद्ध–भूमि में जाने की आवश्यकता नहीं होगी। तुम्हें अपने भाई के पौरुष में विश्वास है, देश की युवा शक्ति में विश्वास है। उनके परिवारों को तुम्हें संभालना है, देवियों का मनोबल ऊँचा रखना है।

तुम्हारी जैसी वीर और विदुषी बालायें जिस देश में हों उसके उद्धार में अब विलम्ब नहीं है। तो आओ बहिन, बढ़ो आगे। तिलक करो अपने भाई का–कर्त्तव्य क्षेत्र में प्रस्थान करने के लिए ताकि देश की कोटि–कोटि बहिनें तुम्हारा अनुकरण कर सकें। यही तुम्हारी राष्ट्रोद्धार व्रत–दीक्षा का समारम्भ होगा।

और तब सभी ने देखा एक आदर्श बहिन ने एक आदर्श भाई को हर्षाश्रुओं से नहला दिया। पद्मरागा के ये आँसू कृतज्ञता के आँसू थे। महावीर हनुमान की बहिन के रूप में सचमुच वह धन्य हो उठी थी। और तभी आचार्य एवं आचार्या जी ने दोनों को कर्त्तव्य क्षेत्र में प्रस्थान करने का आदेश दिया।

दिशायें बजरंगी हनुमान के पौरुष और राष्ट्रप्रेम का कीर्तिगान करने के साथ ही और भी ऊँचे स्वर में देवी पद्मरागा की अश्रुतपूर्व तपश्चर्या का जय–जय गान कर रही थीं।

बवासीर का अचूक इलाज – त्रिफलाचूर्ण

श्री एच० सी० अवस्थी

मेरी उम्र के 43 वर्ष पार कर जाने के बाद बवासीर की बीमारी ने उग्र रूप धारण कर लिया। सभी तरह की दवाएँ और काफी इलाज कराया, पर कोई लाभ न पहुँचा। नौबत ऑपरेशन तक आ गयी। तब अकस्मात् मुझे याद आया कि पू० पिताजी कहते थे कि 'त्रिफला चूर्ण पेट की बीमारी के लिये अमृत स्वरूप है।' पेट (शौच)– की समस्याएँ जब गम्भीर रूप धारण करती हैं तभी बवासीर की बीमारी होती है, ऐसा सभी जानकारों का कहना है। अतएव माँ दुर्गा भवानी का स्मरण करते हुए बाजार से 'त्रिफला चूर्ण' की एक शीशी ले आया और रात्रि में सोते वक्त तीन चम्मच चूर्ण पानी के साथ ले लिया। दूसरे दिन बड़ी राहत महसूस हुई। इस प्रकार नवम्बर सन् 1998 ई० से लेकर मई सन् 1999 ई० तक एक भी दिन का नागा न करते हुए लगातार त्रिफला चूर्ण का सेवन किया। जिससे बवासीर की तकलीफ जाती रही। ऐसा लगने लगा कि आँखों की रोशनी भी कुछ बढ़ गयी है; क्योंकि महीन टाईप का अखबार भी मैं बिना चश्में की सहायता से अब पढ़ सकता हूँ। इसके अलावा उड़द की दाल, चने की दाल और बैंगन के खाने पर भी तकलीफ महसूस नहीं होती। लगभग प्रतिमाह 240 ग्राम त्रिफलाचूर्ण नियमित सेवन के लिये आवश्यक है। इसके बाद आवश्यकतानुसार अब मैं कभी–कभार 'त्रिफला चूर्ण' का सेवन करता हूँ। अतएव उपर्युक्त बीमारी से अस्वस्थ भाई–बहनें 'त्रिफलाचूर्ण' का सेवन कर स्वास्थ्य–लाभ करें, यही उनसे प्रार्थना है।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून की यज्ञशाला के विस्तारीकरण का चित्र

सम्मानीय भाइयों और बहिनो

सादर् प्रणाम

आपको जानकर हर्ष होगा कि वैदिक साधन आश्रम तपोवन नालापानी देहरादून की यज्ञशाला के विस्तारीकरण का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है ताकि आश्रम में आयोजित होने वाले वृहद यज्ञों के अवसर पर प्रतिकूल मौसम के कारण किसी प्रकार का व्यवधान न हो और यज्ञों का निर्विघ्न समापन हो सके। यज्ञशाला के चारों ओर लगभग 4500 वर्ग फिट का लिंटर डाल दिया गया है अब पलास्टर तथा टाइल्स लगाने का कार्य तथा यज्ञशाला के सौन्दर्यीकरण का कार्य शेष है। यज्ञशाला के चारों ओर हवा, रोशनी तथा धुआँ निकलने की उचित व्यवस्था की गई है।

इसके साथ ही उच्च न्यायालय नैनीताल के आदेशानुसार सड़क के चौड़ीकरण के कारण तपोवन विद्यालय तथा आश्रम की लगभग 1000 फुट लम्बी और 8 फुट ऊँची दीवार प्रशासन द्वारा ध्वस्त कर दी गई है। विद्यालय तथा आश्रम की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए 5 फुट ऊँची तथा उसके ऊपर 4 फुट रैलिंग वाली बाउन्ड्री वॉल का निर्माण भी करवाना पड़ रहा है। इस प्रकार उपरोक्त चाहे–अनचाहे निर्माण कार्यों के कारण आश्रम के ऊपर वित्तीय भार आ गया है।

आश्रम के सभी शुभचिन्तकों तथा दानदाताओं से विनम्र अनुरोध है कि अपनी क्षमतानुसार आश्रम फंड में अधिक से अधिक दान देने की कृपा करें। आश्रम को दिया गया दान इनकम टैक्स की धारा 80 जी के अन्तर्गत करमुक्त है। आप दान की राशि कैनरा बैंक खाता 'वैदिक साधन आश्रम' खाता नं0–2162101001530, आई एफ एस सी कोड **CNRB**0002162 में जमा करके आश्रम के मो0 न0–7310641586 पर सूचित करें ताकि आपको दान की रसीद भेजी जा सके।

सादर्

भवदीय

(प्रेम प्रकाश शर्मा)

सचिव

मो0–9412051586

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन

रायपुर रोड (नालापानी), देहरादून–248008, दूरभाष : 0135–2787001

आत्मकल्याण का स्वर्णिम अवसर

योग–साधना, यजुर्वेद पारायण एवं गायत्री यज्ञ का विशेष आयोजन

तदनुसारेण 12 मार्च से 20 मार्च 2019 तक

यज्ञ के ब्रह्मा–स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी

आत्मकल्याण के जिज्ञासुओं के लिए प्रभुकृपा से तपोवन आश्रम के ऊपरी प्रभाग–पहाड़ी पर एक लाख गायत्री महामंत्र एवं यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। सच्चे, योग्य तथा समर्थ जिज्ञासु जन पूर्ण उत्साह के साथ श्रद्धा–आस्था समन्वित हुए भाग लेवें। यह आयोजन याज्ञिकों के लिये सर्वथा निःशुल्क होगा। श्रद्धापूर्वक दिया गया सहयोग ही स्वीकार किया जाएगा।

आयोजन में भाग लेने वाले जिज्ञासुओं के लिये अनिवार्य नियम अधोलिखित है–

सभी यज्ञप्रेमी सज्जनों और योग साधकों को 11 मार्च 2019 की सांयकाल तक पहुंचना आवश्यक होगा। 12 मार्च 2019 की प्रातःकाल से नियमित कार्यक्रम प्रारम्भ हो जायेंगे। कृपया अपने साथ चाकू, टार्च, कॉपी, पैन तथा ओढ़ने का वस्त्र अवश्य लायें।

कार्यक्रम सारिणी

प्रातः जागरण	3–4 के मध्य
योग साधना, आसन प्राणायाम, ध्यानादि	4 से 7 बजे प्रातः
यज्ञ प्रातःकाल	7:30 से 9:30
प्रातः प्रातराश	9:30 से 10:00
यज्ञ–सायंकाल	3.30 से 5.30 सायं
साधना	6.00 से 8.00 बजे रात्रि
भोजन रात्रि	9.00 बजे तक
रात्रि–शयन	1.00 से 3.00 बजे

निवेदक

दर्शन कुमार अग्निहोत्री	**ई. प्रेम प्रकाश शर्मा**	**सुधीर माटा**
अध्यक्ष–09710033799	सचिव–09412051586	कोषाध्यक्ष–9837036040

वैदिक साधन आश्रम तपोवन नालापानी, देहरादून दानदाताओं की सूची

01–10–2018 से 30–11–2018 तक

क्र.स.	नाम	धनराशि
1	श्रीमती एस0 चड़ढा जी, नई दिल्ली	5000
2	श्री मृणान माथुर, निधि माथुर जी, गाजियाबाद	15000
3	श्री दीपक घई एवं सुप्रिया घई जी, सहारनपुर	15000
4	श्री धीरेन्द्र सचदेवा जी, देहरादून	1100
5	श्रीमती उषा रानी मेहता, प्रयागराज	1000
6	श्री जितेन्द्र प्रसाद जी, मऊ आर्य समाज	1100
7	श्री हरबंस लाल जी, भिवानी	5100
8	श्रीमती सत्यावती नांदल जी, तपोवन	5100
9	श्री सोमपाल सिंह यादव जी, रामपुर	5000
10	श्री अशोक कुमार, विलासपुर, रामपुर	1100
11	श्री रामकिशन मलिक जी, पानीपत हरियाणा	1100
12	माता नरेन्द्र बब्बर जी, तपोवन	2500
13	श्री बलबीर सिंह राणा जी, देहरादून	1100
14	श्री सुरेन्द्र सिंह जी, बिजनौर	2000
15	श्रीमती धर्म देवी जी, नई दिल्ली	2000
16	श्री नन्द किशोर अरोड़ा जी, तपोवन	2000
17	श्री आई0 डी0 गुप्ता जी, नोयडा	1100
18	श्री सुखवीर सिंह वर्मा जी, देहरादून	5100
19	श्री के0 पी0 सिंह जी नई दिल्ली	5100
20	श्री रामभज दत्त जी, पानीपत	5100
21	श्री रतन सिंह मोकटा जी, जुब्बल	1100
22	श्री प्रभुदयाल सचदेवा जी, दिल्ली	5100
23	श्री सूरत राम शर्मा जी, तपोवन	2100
24	श्री प्रेम चन्द जी, सहारनपुर	1100
25	आर्य समाज थर्मल कालोनी, पानीपत	1100
26	श्री शुभाष मोर जी, सोनीपत	1100
27	श्री सुरेन्द्र आरोडा जी, देहरादून	7100
28	श्री ज्ञानचन्द अरोडा जी, तपोवन	5000
29	स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, धौलास देहरादून	51000
30	श्री मदन मोहन आर्य जी, देहरादून	1100
31	श्री कमलदेव प्रसाद आर्य जी, चम्पारण	1100
32	श्रीमती निर्मला जांगिड जी, देहरादून	2100
33	श्री कुशांत आर्य जी, दिल्ली	2100
34	श्रीमती अनिता अरोडा जी, नौएडा	1100
35	श्रीमती सरोज रानी बंसल जी, जालन्धर	1100
36	श्री सुदेश आर्या जी, पलवल हरियाणा	5100
37	आर्य समाज जवाहर नगर पलवल	1100
38	श्रीमती पुष्पा देवी आर्या, पलवल	3100
39	श्री रमेश चन्द्र जी, लखनऊ	1000
40	श्री रामभजन मदान जी, दिल्ली	100000
41	श्री ज्ञानेन्द्र पाल जी, दिल्ली	2100
42	श्री सुखवीर सिंह सैनी जी, दिल्ली	2100
43	श्री जगन्नाथ सुनेजा जी, दिल्ली	1100
44	श्री राम अवतार शर्मा जी, दिल्ली	1100
45	श्री ओम प्रकाश हंस जी, दिल्ली	1501
46	श्री छककनलाल जी, ज्वालापुर हरिद्वार	2100
47	श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता जी, चंपारण	1100
48	श्री ब्रह्मपाल सिंह जी, रुडकी	1100
49	श्री आई0 डी0 गुप्ता जी, नोयडा	1100
50	श्री रमन कुमार जी, विकास नगर देहरादून	1100
51	श्री युधिष्ठर जुनेजा जी, दिल्ली	2100
52	श्रीमती रेणु साहा जी, देहरादून	1100
53	श्रीमती वेद कुमारी जी, दिल्ली	1100
54	श्री मूलशंकर सिक्का जी, दिल्ली	1100
55	श्री रणजीत राय कपूर जी, देहरादून	1000
56	श्री पंकज गोगिया जी, दिल्ली	2100
57	श्री राजेन्द्र छाबडा जी, हरियाणा	3100
58	आर्य समाज झण्डा, यमुनानगर	1100
59	श्री धर्मवीर तलवार जी, देहरादून	1000
60	श्रीमती कृष्णा सन्दूजा जी, दिल्ली	2100
61	श्री अन्नत आर्य जी, देहरादून	1100
62	पावनी अग्रवाल जी, लुधियाना	3100
63	श्री जय भगवान शर्मा जी, देहरादून	1001
64	श्री जगदीश चन्द्र जी, गाजियाबाद	1100
65	श्री कृष्ण लाल जी, रोहतक	3100
66	डा0 नीरज गोगिया जी, रोहतक	1100
67	श्री चन्द्र गुप्त विक्रम जी, देहरादून	2100
68	श्री सतीश कुमार गुप्ता जी, देहरादून	1100
69	श्री राजकुमार भण्डारी जी, देहरादून	2500
70	अग्निहोत्री धर्माथ ट्रस्ट, दिल्ली	90000
71	सुनीता बद्धिराजा जी, दिल्ली	2000
72	तरुण कुकरेजा जी, दिल्ली	2000
73	वरुण कुकरेजा जी, दिल्ली	2000
74	दीपाली कुकरेजा जी, दिल्ली	2000
75	दिव्यांशु अग्निहोत्री जी, दिल्ली	2000
76	सुनीता चुंग्ग जी, दिल्ली	2000
77	जी0के0 हाण्डा जी, दिल्ली	2000
78	संदीप अग्रवाल जी, दिल्ली	2000
79	एज0 सी0 अरोडा जी, दिल्ली	2000

क्र.स.	नाम	धनराशि
80	शर्मिला कुकरेजा जी, दिल्ली	2000
81	कंचन अग्रवाल जी, दिल्ली	2000
82	लोक श्री कुकरेजा जी, दिल्ली	2000
83	श्री हरिदत्त जी, दिल्ली	2000
84	नान्हकी बाई जी, दिल्ली	2000
85	भोलाराम जी, दिल्ली	2000
86	आर्य समाज लक्षमण चौक देहरादून	1000
87	श्री देव पाहवा जी, नई दिल्ली	12000
88	श्री इन्द्रजीत आर्य हरियाणा	6000
89	श्री देव प्रकाश शर्मा जी, नई दिल्ली	3100
90	श्री हरि किशोर महेन्द्र जी, देहरादून	11000
91	डा0 एस0 पी0 शर्मा जी, नोयडा	2100
92	डा0 रेणुका प्रकाश जी, देहरादून	1100
93	देव और आस्था जी, देहरादून	2100
94	माधुरी आर्या जी, बिहार	5100
95	श्री आशीष जी आग्र, तपोवन	11000
96	श्री देवेन्द्र नाथ जी, मॉरीशस	2740
97	श्री विद्यार्थी श्रीराम, टोरन्टो कनाडा	5000
98	श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा जी, देहरादून	5000
99	आरव एवं अमेया जी, देहरादून	2100
100	श्री सत्य प्रकाश गोयल जी, देहरादून	21000
100	श्री सत्य प्रकाश गोयल जी, देहरादून	21000
101	श्री दीपक गोयल जी, मुम्बई	10000
102	श्री रोहन गोयल जी, मुम्बई	10000
103	श्रीमती प्रेमलता आर्या जी, हरियाणा	1100
104	श्री अशोक अरोडा जी, नोयडा	2500
105	श्री जे0 एस0 सामन्त जी, हलद्वानी	2500
106	श्री अश्विनी कुमार बब्बर, दिल्ली	1100
107	श्री दिनेश शर्मा जी, हरियाणा	1100
108	सुश्री आरुषि जी, देहरादून	1000
109	श्री शैलैश गर्ग जी, लुधियाना	4000
110	श्री रमेश चन्द्र टांगडी जी, देहरादून	2000
111	माता नरेन्द्र बब्बर जी, तपोवन	1100
112	श्रीमती धर्म देवी जी, नई दिल्ली	2000
113	श्री के0 एल0 पाल जी, तपोवन	1000
114	श्रीमती नारायणी देवी जी, हरियाणा	5100
115	श्री आलोक कुमार जी, देहरादून	2000
116	श्री नन्द किशोर अरोड़ा जी, तपोवन	1100
117	श्री तेजस मुनि जी, ज्वालापुर	1100
118	श्री श्रुतान्त जी, देहरादून	1000
119	श्रीमती वेद वती आर्य जी, रोहतक	2100
120	श्रीमती नारायणी देवी जी, झज्जर	1100
121	सुश्री पूजा शर्मा जी, दिल्ली	2100
122	ललिता परिहार जी, पानीपत	1000
123	रेशा नागर जी, दिल्ली	3100
124	श्री मुनेश नागर जी, दिल्ली	2100
125	श्रीमती सरोज नेगी जी, दिल्ली	1100
126	श्रीमती अंगूरी देवी जी, गाजियाबाद	2100
127	श्री समृद्धि त्यागी जी, मुज्जफरनगर	1100
128	श्रीमती कविता चौहान जी, मेरठ	1100
129	गुर्जर कन्या गुरुकुल देवधर यमुनानगर	2100
130	श्रीमती सुमना गुप्ता जी, मुम्बई	3100
131	श्रीमती सुमन आर्या जी, ज्वालापुर	5500
132	श्री दुर्गा प्रसाद अग्रवाल जी, हरिद्वार	2000
133	श्रीमती प्रेमलता अग्रवाल जी, हरिद्वार	2000
134	श्री उपेन्द्र अग्रवाल जी, हरिद्वार	2000
135	श्री अनिल जी, हरियाणा	2100
136	श्री कपिल देव शर्मा जी, दिल्ली	1100
137	श्री अमर सिंह जी, दिल्ली	1100
138	श्री कपूर मुनि जी, पंचकुला	1100
139	श्री रमेश चन्द्र आर्य जी, आगरा	1500
140	श्री कुल्दीप सिंह जी, सहारनपुर	1100
141	श्री इन्द्रजीत कुमार एवं संदीप कुमार जी पंचकुला	21000
142	श्री दीपक अग्रवाल जी, आगरा	1100
143	श्री अरुण सैनी दिल्ली	1100
144	ऋषिपाल जी, खन्तौरी मंडी	1100
145	श्री वेद पाल जी, खन्तौरी मंडी	1100
146	श्री सिद्धांत सिंगला जी, खन्तौरी मंडी	1100
147	श्री महेन्द्र सिंह जी, जगाधरी	1000
148	श्री कृष्ण पाल जी, सहारनपुर	1100
149	श्री शेर सिंह आर्य जी, सहारनपुर	1100
150	श्री ताराचन्द्र जी सहारनपुर	1500
151	श्री नाथी राम आर्य जी, सहारनपुर	1100
152	श्री जयपाल आर्य जी, सोनीपत	2100
153	श्री संजीव राणा जी, सहारनपुर	1100
154	श्री प्रणव मुनि जी, ज्वालापुर	8200
155	श्री सदानन्द आर्य जी, ज्वालापुर	5500
156	श्री विनोद कुमार जी, सहारनपुर	1100
157	श्री ब्रजपाल सिंह जी, मथुरा	1000
158	श्री योगमुनि जी, ज्वालापुर	1000
159	श्री प्रभु जी नन्द लाल, मॉरीशस	15860
160	श्री अमृत मुनि जी, ज्वालापुर	10000
161	श्री अशोक रावत जी, नोएडा	1000
162	श्रीमती द्रौपदी जी, दिल्ली	1100
163	श्री सत्य पाल जी, दिल्ली	1100

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून सभी दानदाताओं का हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करता है।
आशा है भविष्य में भी इसी प्रकार आश्रम में पधारकर अपने सात्विक दान से आश्रम की मदद करते रहेंगे।

Delite KOM

freedom to work...

Delite Kom Limited

All dimensions are subject to change without any prior notice because of continuous research & development. All designs shown here are proprietary. Any infringement is liable for prosecution.

DELITE KOM LIMITED

Kukreja House, IInd Floor, 46, Rani Jhanshi Road, New Delhi-110055

Ph. : 011-46287777, 23530288, 23530290, 23611811 **Fax** : 23620502 **Email** : delite@delitekom.com

डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2018-2020 समाचार पत्र पंजीयन 51900/88

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित।
संपादक- कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री